आकाशवाणी के

छात्रीय कार्यक्रम

छठी कक्षा के लिए

संस्कृत



1971-72

आकाशवाणी, दिल्ली

जो अच्छी हिन्दी, बंगाली, गुजराती, मराठी या अन्य प्रादेशिक भाषा सीखना चाहें उन्हें संस्कृत तो सीखनी ही पड़ेगी ।

मुझे तो यह पश्चात्ताप होता है कि मैं अधिक संस्कृत न सीख सका, क्योंकि आगे चलकर मैंने समझा कि किसी भी भारतीय बालक को संस्कृत का अच्छा अभ्यास किये बिना नहीं रहना चाहिये ।

—— गांधी जी

संसार की प्राचीन भाषाओं में से संस्कृत का स्थान बहुत ऊंचा है । मैं चाहता हूं कि आज भी ज्यादा लोग संस्कृत पढ़ें । संस्कृत ने हमारे देश की एकता को बढ़ाया है और संस्कृत से हमारी सभी भाषाओं को बल मिलता है ।

—— पं० जवाहरलाल नेहरू

आज तीसरी आंख की जरूरत है, भगवान शंकर की तीसरी आंख , इसे ही हम संस्कृत कहते हैं ।

—— विनोबा भावे

आकाशवाणी के

छात्रीय कार्यक्रम

छठी कक्षा के लिए

विषय-संस्कृत



1971-72

जुलाई 1971 से मार्च 1972 तक

आकाशवाणी, दिल्ली

संख्या	विषय-सूची	पृष्ठ

हम संस्कृत क्यों पढ़ें ?

हमारी राष्ट्रीय और सांस्कृतिक एकता की प्रतीक संस्कृत

संस्कृत वह भाषा है, जिससे भारत की संपूर्ण भाषायें रस ग्रहण कर उत्तरोत्तर परिपुष्ट हो रही हैं । उत्तर भारत की हिन्दी, पंजाबी, काश्मीरी, बंगला, असमिया, उड़िया, राजस्थानी, गुजराती, मराठी आदि भाषायें तो संस्कृत से विकसित हुई ही हैं । दक्षिण भारत की भाषाओं के विकास में भी संस्कृत का महत्वपूर्ण योग रहा है । जिस प्रकार उत्तरभारतीय भाषाओं में बंगला संस्कृतमय है, कविताओं में तो अस्सी प्रतिशत तक संस्कृत शब्दों का प्रयोग रहता है, साथ ही आम लोगों की भाषा में भी वहां आधे से अधिक शब्द संस्कृत के ही रहते हैं । उसी प्रकार दक्षिण भारत की मलयालम् भाषा में संस्कृत का खुलकर प्रयोग होता है । संस्कृतज्ञ के लिए मलयालम् सीखना अथवा मलयालम्-भाषी के लिये संस्कृत सीखना कोई कठिन बात नहीं । इसी प्रकार कन्नड़ तेलगू आदि दक्षिण की अन्य भाषाओं में भी संस्कृत शब्दों का प्रयोग रहता है । इस प्रकार कह सकते हैं कि संस्कृत एक ऐसी भाषा है, जो उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक रामेश्वरम् से बदरिकाश्रम (बदरीनाथ) और पूर्व में जगन्नाथ पुरी से पश्चिम में द्वारका पुरी तक के जन-जीवन में आज हजारों वर्षो से प्रचलित रही है और आज भी प्रचलित है । इतना ही क्यों संस्कृत का प्रचार और प्रसार दक्षिण भारत में भी उत्तर भारत के समान ही होता रहा है । वास्तव में संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसमें उत्तर या दक्षिण, पूर्व या पश्चिम का कोई भेद नहीं । भारत के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक के प्रत्येक व्यक्ति की भाषा में संस्कृत का रस प्रवाहित हो रहा है । इसीलिये प्रत्येक भारतीय को संस्कृत अनायास ही समझ में आ जाती है । और संस्कृत के पढ़ने पढ़ाने में कोई कठिनाई नहीं होती ।

संस्कृत हमारी संस्कृतिक धरोहर

संस्कृत भारत की समृद्ध संस्कृति का अक्षय कोष है । प्राचीन भारत को समझने और जानने के लिए अपनी परम्पराओं से परिचित होने के लिये रामायण, महाभारत और उपनिषद-साहित्य में छिपे हुए जीवन के गूढ़तम रहस्यों से परिचित होने के लिये संस्कृत ही एक मात्र-प्रवेश-द्वार है । भारतीय संस्कृति का संपूर्ण स्वरूप संस्कृत के सहारे ही स्थिर है । संस्कृत के इसी महत्व को भलीभांति समझते हुए पूज्य बापू ने अपनी 'आत्मकथा' में संस्कृत -शिक्षा पर विशेष बल दिया है ।

संस्कृत और यूरोपीय भाषाएं

हम भारतवासी यह तो प्रायः जानते हैं कि संस्कृत हम सब लोगों की भाषाओं में चाहे वह हिन्दी हो या मलयालम, अथवा बंगाली या पंजाबी, एक प्रमुख शक्ति-स्रोत के रूप में अन्तःसलिला की भांति प्रवाहित हो रही है। पर विशेष बात जो समझने की है, वह यह है कि संस्कृत का संबंध केवल भारतीय भाषाओं से ही नहीं यूरोप की ग्रीक और लेटिन इन दोनों प्राचीन भाषाओं से भी संस्कृत का उतना ही घनिष्ट संबंध है। इस संबंध में मैक्समूलर 'हम भारत से क्या सीख सकते हैं' (India what it can Teach us) नामक अपने ग्रन्थ में लिखते हैं कि——

'मुझे उस दिन की याद है, तब में लिपजिग के विश्वविद्यालय में पढ़ता था। तीसरे पहर डा० ली ने पढ़ाने के क्रम में बताया कि एक ऐसी भाषा थी जो भारत में बोली जाती थी और ग्रीक तथा लैटिन भाषाओं से ही नहीं वरन जर्मन तथा रूसी भाषाओं से उसका बड़ा साम्य था। पहले हमने समझा कि प्रोफेसर साहब आज हसने-हंसाने के मूड में हैं। पर जब हमने श्यामपट की ओर देखा तो हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, उस पर संस्कृत ग्रीक तथा लेटिन भाषाओं के समान अंक सर्वनाम तथा क्रियायें समानान्तर रेखाओं तथा स्तंभों में लिखी हुई थीं। हम लोगों के सामने एक इतना बड़ा तथ्य उद्घाटित किया गया था, जो हमारी प्रचलित विचार धारा के सर्वथा विरुद्ध था, किंतु जिसके प्रमाण ऐसे अकाट्य थे कि उनके सामने सिर झुकाने के सिवा कोई चारा नहीं था। .... इस प्रकार हमने देखा कि संस्कृत भाषा वही है जो ग्रीक, लेटिन तथा आंग्लसेक्शन भाषाएं हैं।'

एक स्थान पर वे लिखते हैं कि—'आप पूछेंगे या पूछना चाहेंगे कि ऐसी कौनसी विशेषता संस्कृत भाषा में है, जिसके कारण हमें उस पर विशेष ध्यान देना चाहिए।' इसके उत्तर में उन्होंने उक्त विचारों के साथ और भी बहुत कुछ युक्तियां दी हैं और यह सिद्ध किया है कि केवल भारतीय भाषाओं के ही नहीं अपितु यूरोपीयन भाषाओं के ज्ञान के लिए भी संस्कृत बहुत आवश्यक है।

भारतीय आर्य भाषाएं तो संस्कृत से निकलली ही हैं, यूरोप की ग्रीक और लेटिन भाषाएं भी बिल्कुल संस्कृत के साथ-साथ चलती हैं। इतना ही नहीं यूरोप में आज-कल बोली जाने वाली जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी आदि भाषाएं भी संस्कृत के साथ किस प्रकार संबद्ध हैं, इसके उदाहरण के लिए निम्न प्रश्न-वाक्य और उनके उत्तरों को देखिये ——

	प्रश्न	उत्तर
हिन्दी—	1 तेरा नाम क्या है ?	—1 मेरा नाम त्रिवेदी है।
	—2 तुम्हारे नाम क्या हैं ?	—2 हमारे नाम हैं .....

एक वचन

जर्मन--Was ist Dine Name	Mien name ist Trivedi
(वस इस्ट डाइन नामे)	(माइन नामे इस्ट त्रिवेदी)
संस्कृत--किम् अस्ति ते नाम ?	मे नाम अस्ति त्रिवेदी
फ्रेंच--Quell est vote Nom ?	Mon nom est Trivedi
केलाएं वोत्रव नोम	(मो नोंम एं त्रिवेदी)
संस्कृत--किम् अस्ति वो नाम	मे नाम अस्ति त्रिवेदी
अंग्रेजी--What is thien name?	My Name is Trivedi
संस्कृत--किम् अस्ति ते नाम	मे नाम अस्ति त्रिवेदी

बहुवचन, द्विवचन

जर्मन--Was Sind Euer Namen?	Unsur Namen Sind
(वस् जिंट ओख नामेन)	(अन्जर नामेन जिन्ट)
संस्कृत--कानि सन्ति वो नामानि	अस्माकं नामानि सन्ति
फ्रेंच--Quell Sont votres Noms?	Notre Noms sont
(केला साँ वोत्स नोम ?)	नोत्ख नोम सां
संस्कृत--कानि सन्ति वो नामानि ?	नो नामानि सान्ति
अंग्रेजी--What are your names?	Our names are..............
संस्कृत--के स्त: युवयोर् नामनि	आवयोर् नम (नि) स्त:

इन वाक्यों से यह स्पष्ट है कि आधुनिक यूरोपियन भाषाएं भी संस्कृत के उतनी ही निकट हैं। हमारे शिक्षक और छात्रगण यूरोप की एक भाषा अंग्रेजी से परिचित हैं। अंग्रेजी में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण और अव्यय आदि सभी कुछ संस्कृत के ही हैं। अंग्रेजी के सर्वनामों को ही लीजिए--

	एक वचन		बहुवचन या द्विवचन	
उत्तम पुरुष--				
	अंग्रेजी	संस्कृत	अंग्रेजी	संस्कृत
कर्ता	I (लेटिन ego)	अहम्	We	वयम् (वि अम्)
कर्म	Me	मा	Us	अस्मान् (अस मान्)
सम्बन्ध	My	मे	Our	आवयोर (द्वि)

मध्यम पुरुष--

कर्ता	Thou	त्वम्	You	यूयम् (यू अम्)
कर्म	Thee	त्वा	You	युष्मान्
सम्बन्ध	Thien	ते	Your	युवयोर् (द्वि)

अन्य पुरुष--

कर्ता	He	स:	They	ते
	She	सा		
कर्म	Him	सम्	Them	तान्
	Her	साम्		
सम्बन्ध	His	सस्य	Their	तयोर् (द्वि)
		सस्या :		

यहां स्मरण रखने वाली विशेष बात यह है कि पहले संस्कृत में तम् तौ तान् के साथ सम् सौ सान् रूप भी चलते थे। अंग्रेजी के Him आदि उन्हीं के प्रतिरूप हैं।

जब ग्रीक और लेटिन के साथ संस्कृत इतना निकट का सम्बन्ध है, तो इन दोनों भाषाओं से विकसित होने वाली, युरोप की आधुनिक अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन, रूसी आदि भाषायें भी अपने आप संस्कृत से सम्बद्ध हो जाती हैं। यही स्थिति फारसी की भी है। पारसियों के धर्मग्रन्थ ज़न्दावस्ता की भाषा वैदिक भाषा से मिलती जुलती है। और उसी भाषा से वर्तमान फारसी का भी क्रमिक विकास हुआ है। अत: संस्कृत केवल भारतीय भाषाओं के ही नहीं अपितु अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच आदि, आधुनिक यूरोपियन भाषाओं तथा फारसी और पश्तो आदि भाषाओं के भी मूल में रमी हुई है। इसलिए यदि भाषा-शास्त्रीय दृष्टि से संस्कृत का अध्ययन अध्यापन किया जाने लगे, तो संस्कृत किसी के लिए भी एक अजनबी या अपरिचितभाषा नहीं रह जाती। दक्षिण भारत की भाषाओं में और मलेशिया, इंडोनेशिया आदि सुदूरपूर्वी देशों की भाषाओं में भी संस्कृत का स्पष्ट प्रभाव लक्षित होता है। इस प्रकार संस्कृत के ज्ञान से संसार की अनेक भाषाओं को सीखने में हमें बहुत सहायता मिल सकती है।

हिन्दी और संस्कृत की रूप-रचना

यह तो ठीक है कि हिन्दी भी संस्कृत-परिवार की ही एक भाषा है और हिन्दी जानने वालों के लिए संस्कृत का ज्ञान प्राप्त कर लेना कोई कठिन नहीं है

कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि हिन्दी और संस्कृत साथ ही साथ चल रही हैं। कुछ उदाहरण :—

हिन्दी	संस्कृत
(क) लता लिखती है।	(क) लता लिखति।
(ख) सरला पुस्तक पढ़ती है।	(ख) सरला पुस्तकं पठति।
(ग) सुशीला चलती है।	(ग) सुशीला चलति।
(घ) शोभा पत्र लिखती है।	(घ) शोभा पत्रं लिखति।
(ङ) नदी में नावें तैरती हैं।	(ङ) नद्यां नाव: तरन्ति।

इस प्रकार हिन्दी और संस्कृत की रूपरेखा भी लगभग एक जैसी ही लगती है। किन्तु संस्कृत एक प्राचीन भाषा है और प्राचीन आर्या-भाषाओं की जो विशेषतायें हैं वे इस में अब भी सुरक्षित हैं। उन विशेषताओं के कारण और हिन्दी में होने वाले विकास के कारण इन दोनों भाषाओं की रूप-रचना में बहुत अन्तर आ गया है। जैसे कि :—

1, क्रियाओं में लिंग भेद

हिन्दी में लड़का चलता है और लड़की चलती है। इस प्रकार क्रियाओं के साथ भी स्त्रीलिंग और पुंलिग के भिन्न-भिन्न क्रिया-प्रत्यय लगते हैं। या यूं कहें कि लिंग भेद के कारण भी क्रियाओं में परिवर्तन होता है। किन्तु संस्कृत में क्रियायें कर्ता के अनुसार लिंग नहीं बदलती, वे एकरूप ही रहती हैं। बालक: (पुं) पठति और बालिका (स्त्री० पठति)। दोनों में पठति क्रिया एक जैसी रहती है। हिन्दी क्रियाओं के लिंग परिवर्तन का कारण यह है कि हिन्दी की क्रियाएं संस्कृत के कृदन्त रूपों, गत,: कृत:, आदि से होती हुई आई हैं। और यह क्तप्रत्ययान्त क्रियायें संस्कृत में भी कर्ता के अनुसार, विभिन्न लिंगों में अपने रूप बदलती हैं, जैसे बालक: गत:, बालिका गता, पत्रं पतितम् आदि।

तो सब से पहली बात यह है कि संस्कृत में क्रियायें कर्ता के अनुसार विभिन्न लिंगों में परिवर्तित नहीं होतीं वे सब लिंगों में इंग्लिश के समान एक जैसी रहती हैं।

2, द्विवचन का प्रयोग

हिन्दी में एकवचन और बहुवचन ये दो ही वचन हैं। पर संस्कृत में एक वचन, द्विवचन और बहुवचन ये तीन वचन होते हैं। इस द्विवचन के बारे में आगे यथास्थान विचार होगा।

हिन्दी में स्त्रीलिंग और पुंलिग दो ही लिंग होते हैं किन्तु संस्कृत में स्त्रीलिंग पुंलिंग के साथ-साथ नपुंसकलिंग भी है। 'पत्र' 'फल' 'जल' आदि शब्द नपुंसक-लिंग के हैं।(पर इन नपुंसकलिंग के शब्दों से घबराने की आवश्यकता नहीं। क्योंकि इनके रूप केवल कर्ता में ही (क्योंकि कर्म के रूप तो कर्ता के अनुसार ही बनते हैं) पुंलिंग की अपेक्षा स्वतन्त्र बनते हैं। तृतीया से लेकर सप्तमी तक के रूप नपुंसक लिंग में भी पुंलिग के समान ही बनते हैं। और कौन सा शब्द पुलिंग है और कौन सा नपुंसक लिंग है, इस का ज्ञान भी अभ्यास से धीरे-धीरे अपने आप हो जाता है। यहां एक बात और याद रहे कि प्राचीन भाषाओं में ही नहीं जर्मन जैसी आधुनिक बोल-चाल की यूरोपियन भाषाओं में भी अब तक नपुंसकलिंग के शब्दों के रूप अलग से चलते हैं और उन्हें याद रखने में किसी जर्मन बालक को कोई कठिनाई नहीं होती। तो फिर संस्कृत के नपुंसकलिंग के रूपों से (जबकि मात्र प्रथमा के रूप ही पुंलिग से भिन्न बनते हैं घबराने की कोई बात नहीं।

4, परस्मैपद और आत्मनेपद

हिन्दी-भाषी छात्र को संस्कृत की वाक्य-रचना में एक और बडी विशेषता यह मिलेगी कि वहां क्रियाओं में लिंग के कारण तो परिवर्तन नहीं होता पर आत्मने-पद और परस्मैपद के कारण क्रियाओं के रूप बदल जाते हैं। परस्मैपद में धातु के अन्त में:—

ति तः अन्ति

आदि प्रत्यय लगते हैं और रूप बनते हैं:—

पठति पठतः पठन्ति

किन्तु आत्मनेपद में धातु के अन्त में प्रत्यय लगते हैं:—

ते आते या एते अन्ते

और क्रियाओं के रूप बनते हैं:—

सेवते सेवेते सेवन्ते

इस प्रकार हिन्दी के छात्र को आत्मनेपद और परस्मैपद इन दोनों के अलग-अलग रूपों को समझने और उनको याद करने में कुछ कठिनाई हो सकती है। इस लिए हमारा एक विनम्र सुझाव यह है कि आरम्भिक कक्षाओं के सातवीं, आठवीं तक के छात्रों को केवल परस्मैपदी धातुओं के रूप ही याद करवाये जायें। आत्मने-पदी रूप छात्रों को समझा दिये जायें, किन्तु उन्हें कंठस्थ करने के लिये बाध्य न किया जाये। आरम्भिक तीन कक्षाओं में अर्थात् छठी, सातवीं और आठवीं में

परस्मैपदी और उभयपदी धातुओं से ही काम चलाया जाये। आत्मनेपद का सामान्य ज्ञान मात्र पर्याप्त समझा जाये। उस अवस्था में––

"न तथा बाधते दण्डो यथा बाधति बाधते"।

वाली बात तो चलेगी नहीं।

पर :––

बाधते, बाधेते बाधन्ते और बाधताम् बाधेताम् बाधन्ताम्

जैसे आत्मनेपद के रूपों की रटन्त से छात्रों को मुक्ति मिल जायेगी। उस अवस्था में यदि कोई छात्र

सेवति सेवतः सेवन्ति

आदि का प्रयोग कर दे तो उसे क्षम्य समझा जाये।

5, विशेष्य और विशेषण

हिन्दी में स्त्रीलिंग विशेष्यों के भी प्रायः पुंलिग विशेषण चलते हैं, जैसेः–

सफेद कपडा, सफेद धोती।

किन्तु संस्कृत में विशेष्य के अनुसार विशेषण के लिंग भी बदलते हैं जैसेः––

श्वेता शाटी, श्वेतं वस्त्रम् आदि।

किन्तु विशेष्य और विशेषण पदों के मेल से कर्मधारय समास हो जाता है और उस अवस्था में छात्रगण विशेषण के साथ स्त्रीलिंग या नपुंसकलिग का प्रत्यय न भी लगायें तो भी काम चल सकता है। जैसे श्वेतवस्त्रं और श्वेतशाटी और सुन्दर बालिका जैसे रूप भी संस्कृत की दृष्टि से अशुद्ध नहीं हैं, शुद्ध ही हैं

6, सर्वनामों में लिग परिवर्तन

हिन्दी और संस्कृत भाषा की रूप-रचना में एक बड़ा अन्तर यह है कि हिन्दी के सर्वनाम (यह, वह, कौन आदि) दोनों लिंगों में एक से ही रहते हैं। पुंलिग में भी 'उसे' और स्त्रीलिंग में भी ,उसे ही कहगे, किन्तु संस्कृत में और अंग्रेजी, जर्मन आदि भाषाओं में भी विभिन्न लिंगों में सर्वनामों के रूप बदल जाते हैं। जैसेः––

एषः छात्रः और एषा छात्रा या एतत् चित्रम्।

अंग्रेजी में भी इसी प्रकार सर्वनामों में:––

शी, she ही, he और him हिम् her हर

रूप स्त्रीलिंग और पुंलिंग म अलग-अलग वनते हैं। सर्वनामों की रूप-रचना में विशेषत: लिंग-भेद में अंग्रेजी, जर्मन आदि यूरोपियन भाषाएं संस्कृत के अनुसार चलती हैं, पर हिन्दी में विशेषणों की भांति सर्वनाम भी एक ही रूप के बनते हैं।

7, सन्धि और समास

संस्कृत की रूप-रचना में समास का और इस समास के कारण ही सन्धि का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। इसके विपरीत हिन्दी के शब्दों में सन्धि बहुत कम प्रयुक्त होती है। यह बात दूसरी है कि हिन्दी में भी और विशेषत: हिन्दी-कविता में लम्बे-लम्बे समासों वाले और सन्धियुक्त पदों का प्रयोग किया जाता है। और इसलिए हिन्दी व्याकरण में भी सन्धि और समास पढ़ाये जाते हैं, किन्तु हिन्दी ज्ञान के लिए सन्धि या समास अपरिहार्य नहीं हैं। इसके विपरीत संस्कृत का काम सन्धि और समास के बिना चलता ही नहीं। आधुनिक यूरोपियन भाषाओं में फ्रेंच भाषा में सन्धि (स्वरसन्धि) का बहुत अधिक प्रयोग होता है और जर्मन भाषा में समास खूब चलते हैं। इस दृष्टि से अंग्रेजी हिन्दी के समान है, जिसमें सन्धि और समास का प्रयोग अपेक्षाकृत कम होता है।

8, संयोगात्मकता और वियोगात्मकता

संस्कृत और हिन्दी की एक बड़ी विशेषता यह है कि हिन्दी उस वर्ग की भाषा है, जिस के कारक और क्रिया प्रत्यय शब्दों से अलग रहते हैं। ऐसी भाषाओं को वियोगात्मक भाषा कहते हैं, जैसे ,राम में, यहां 'में' विभक्ति राम शब्द से अलग स्वतंत्र रूप स विद्यमान है। पर संस्कृत के प्रत्यय प्रकृति के साथ मिले रहते हैं। जैसे 'रामे' यहां सप्तमी की विभक्ति 'इ' 'राम' के साथ संयुक्त है।

9, स्वर और व्यंजनों के उच्चारण में अन्तर

संस्कृत और हिन्दी के ए ऐ और ओ औ इन स्वरो के उच्चारण में बहुत अन्तर है। जैसे––संस्कृत में तैल कहेंगे पर हिन्दी में इसी 'तैल' को 'तेल' बोलते हैं। 'रामैः' 'जनैः' आदि में प्रयुक्त ऐः का उच्चारण ठीक ढंग से होना चाहिए। ऐ या औ की ही बात नहीं, अ का भी हिन्दी में उच्चारण पूरा नहीं होता। जैसे:–

'जनता' को, लोग प्राय: 'जन्ता' बोलते हैं। यही स्थिति राम की है, राम राम् बोला जाता है। किन्तु संस्कृत में यह नहीं चलता। वहां जनता और राम में न और म का परा उच्चारण करना होता है, हलन्त जैसा नहीं। इसी प्रकार रामः का परिपर्ण विसर्गान्त उच्चारण भी विशेष रूप से स्पष्टतया अभ्यास की अपेक्षा रखता है ।

10 मूर्धन्य ध्वनियाँ

संस्कृत के ट ठ ड ढ ये चार मूर्धन्य अक्षर तो हिन्दी में भी ठीक उसी ढंग से उच्चरित होते हैं। किन्तु संस्कृत के ण की ध्वनी को हिन्दी वाले ठीक से उच्चरित नहीं कर पाते। यहां प्रायः ण को न बना दिया जाता है। 'वीणा' को 'वीना' और 'रमण' को 'रमन' बोलने वालों की कमी नहीं है। यही कारण है कि ऐसे बच्चे 'रामेण' का शद्ध उच्चारण नहीं कर पाते। वे प्रायः ,रामेन, ही कहते हैं। इस 'ण' के उच्चारण पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये। गुण आदि शब्दों का उच्चारण सिखाकर रामेण जैसे रूप भी सिखाए जा सकते हैं।

'श' और 'ष' की स्थिति तो और भी विषम है। 'ष' प्रायः संस्कृत के ही शब्दों में प्रयुक्त होता है। श, ष का भेद भी स्पष्ट समझाने का प्रयत्न होना चाहिए।

छात्रों को संस्कृत भाषा से सम्बन्ध रखने वाली यह सब बातें यथा समय समझाने का प्रयत्न होना चाहिये। किन्तु यह सब कुछ समझाते समय कहीं इस बात का आभास बच्चों को न होने पाये कि उन्हें किसी ऐसी भाषा के बारे में बताया जा रहा है जो हिन्दी से सर्वथा भिन्न है, या वह बहुत कठिन है।

स्मरण रखने की बात यह है कि संस्कृत कोई पराई भाषा नहीं है, हिन्दी, पंजाबी, बंगला आदि सभी उत्तर भारत की भाषाएं संस्कृत परिवार की ही हैं और उन में प्रयुक्त शब्द -भंडार भी अधिकतर संस्कृत का है, चाहे वह तत्सम हो या तद्भव, यह बात दूसरी है। इसी प्रकार संस्कृत के एक ही शब्द के अनेक पर्याय विभिन्न प्रदेशों में प्रचलित हो गये हैं। जैसेः—

हम हिन्दी वाले दूध कहते हैं, यह संस्कृत के 'दुग्ध' का तद्भव रूप है, पर पश्चिमी पंजाब में दूध को खीर कहते हैं। यह 'क्षीर' का तद्भव है। हमारे यहां खीर खाली दूध को न कह कर चावलों के साथ पके हुए दूध को कहते हैं। इसी प्रकार दक्षिण में खीर के जैसे पदार्थ को 'पायसम्' कहते हैं। यह संस्कृत के पयस् का ही रूप है। इसी प्रकार हम हिन्दी वाले आमतौर पर पानी कहते हैं, यह संस्कृत के पानीयम् का तद्भव है, पर बंगाल आदि कई प्रदेशों में जल का ही प्रयोग होता है, पंजाबी में भी आदारार्थ में 'जल छकलो' का ही प्रयोग होता है। इस प्रकार जल पानी से अधिक व्यापक और प्रचलित है। यदि और अधिक विचार करें तो अंग्रेजी आदि यूरोपियन भाषाओं में प्रचलित पानी का वाचक शब्द वाटर(Water) और दूध का वाचक शब्द मिल्क और लैक्टर(Lector) भी संस्कृत परिवार के ही सिद्ध हैं। यह वाटर संस्कृत के उद्र ग्रीक के 'हाइड्र' या हाइड्रोस से निष्पन्न हुआ है। और मिल्क संस्कृत की मृज् धातु से और लैक्टर लिह से संबद्ध है, ऐसा भाषा वैज्ञानिकों का स्पष्ट मत है। पर यह तो बहुत दूर की बातें हैं। हम तो छात्रों

को भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त संस्कृत पदावली से परिचित कराकर उन्हें यह समझाने का प्रयत्न करें कि संस्कृत कोई नई या आपके लिए कोई अपरिचित भाषा नहीं है। इस में लगभग वे ही शब्द हैं जिन्हें आप रात दिन बोलते हैं। ये 'रातदिन' तो संस्कृत के रात्रि और दिनम् हैं ही, इनके यूरोपियन पर्याय, (NIght) और (Day) भी संस्कृत के नक्तम् और द्यौ ही हैं।

यहां एक और बात ध्यान में रखने की यह है कि छात्रों को संस्कृत पढ़ाते समय आरम्भ में शब्दों के अनेक पर्यायों में से ऐसे पार्यायों को काम में लाया जाये जिन का प्रयोग बोल-चाल की भाषा में हो रहा हो। जैसे कि:—जब हमारा काम भारतीय और यूरोपियन भाषाओं में समानरूप से प्रचलित संस्कृत के 'नाम' से चल सकता है तो 'अभिधानम्' क्यों कहें। नाम, नामनी नामानि के रूप याद करने में छात्रों को कठिनाई होगी, यह भी भ्रम ही है। वास्तव में नाम और नामानि ये दो रूप ही पर्याप्त हैं। उन में से भी नाम से तो वे परिचित ही हैं, केवल बहुवचन का नामानि और बता दिया जाये तो संस्कृत में नाम को अभिधानम् कहते हैं, इस प्रकार के भ्रम और एक नये शब्द को याद रखने के श्रम से छात्रों को मुक्ति मिल सकती है।

इन्हीं सब बातों को देखते हुए, आकाशवाणी के इन संस्कृत पाठों का माध्यम हिन्दी रखा गया है। सब बातें हिन्दी में समझी, समझायी जायेंगी, और छात्रों को संस्कृत में बोलने और उसे समझने का अभ्यास हो जाये इस विचार से बीच-बीच में कुछ बातचीत या प्रश्नोत्तर प्रत्येक पाठ में संस्कृत में रहेंगे, पर पाठों का माध्यम हिन्दी ही होगा।

आकाशवाणी के ये संस्कृत पाठ

आकाशवाणी द्वारा प्रसारित होने वाले इन संस्कृत पाठों की अपनी कुछ विशेषतायें रहेंगी। जैसे--

1 ये पाठ शिक्षक और छात्र छात्राओं की बातचीत या प्रश्नोत्तर के रूप में इस ढंग से प्रस्तुत किए जायेंगे कि कक्षा का वातावरण बना रहे।

2 पाठों में विद्यालयों में सुनने वाले श्रोता-छात्रों की रुचि बराबर बनी रहे और वे मूक श्रोतामात्र न हो कर स्वयं भी पाठों में भाग लेने वाले सक्रिय श्रोता शिक्षार्थी बन सकें इसके लिए बीच-बीच में पाठ पढ़ाते समय विद्यालयों में प्रसारण सुन रहे विद्यार्थियों को भी शब्द-रूपों, वाक्यों और श्लोकों को दुहराने के लियें कहा जाएगा।

3 प्रयत्न यह किया जायेगा कि शब्दों और धातुओं के रूपों को कक्षा में ही बार-बार दोहरा कर इस प्रकार सरल और अभ्यस्त बना दिया जाये कि छात्रों को घर पर जा कर उन्हें दुबारा रटने की आवश्यकता न रहे।

4 छात्रों को किसी एक शब्द या धातु के आठों विभक्तियों अथवा तीनों पुरुषों के रूप एक साथ रटने के लिए आदेश देकर उन की रटन्त प्रवृत्ति को बढ़ावा नहीं दिया जायेगा। इसके विपरीत एक शब्द के विभिन्न विभक्तियों के रूपों को कई पाठों में बांट दिया जायेगा। पहले कर्त्ता और कर्म तथा सम्बोधन, फिर दूसरे कारकों के रूप और उन के वाक्यों में प्रयोग पृथक-पृथक पाठों में समझायें और याद कराये जायेंगे।

5 संस्कृत का द्विवचन छात्रों के लियें बहुत भारी पड़ता है। पर वास्तव में ठीक ढंग से समझाया जाये तो द्विवचन के रूप भी उन्हें विशेष परिश्रम के बिना याद करायें जा सकते हैं। इसके लिए आठों विभक्तियों के अलग-अलग और बार-बार द्विवचन के रूप न रटाये जाकर इसके केवल तीन रूप या विभक्ति चिन्हों (औ, भ्याम्, और योः अथवा ओः)
के बारे में भलि-भांति ज्ञान कराया जायेगा।

6 प्रयत्न यह किया जायेगा कि छात्र छात्राएं स्वयं उत्तरोत्तर बातों ही बातों में शब्दों और धातुओं के विविध रूपों के बारे में ज्ञान प्राप्त करते जायें। इस के लिए छात्रों को प्रेरित किया जायेगा कि वे स्वयं संस्कृत में बातचीत करें, छोटे-छोटे वाक्य बोलें अथवा प्रश्नोत्तर करें और शिक्षक जहां उचित समझें, उचित मार्ग-निर्देशन और बीच-बीच में संशोधन करते जायें। इस प्रकार छात्रों में संस्कृत के प्रति वास्तविक रुचि उत्पन्न करने का प्रयत्न किया जायेगा।

7 इन पाठों की एक विशेषता यह भी रहेगी कि संस्कृत से सम्बद्ध जो शब्द अन्य भारतीय और हमारे यहां प्रचलित यूरोपियन (अंग्रेजी) भाषा में प्रयुक्त हो रहे हैं और जिनसे छठी कक्षा के छात्र परिचित हैं, उन के बारे में भी साथ-साथ बताया जाता रहेगा। ताकि श्रोता छात्रगण यह अनुभव करें कि संस्कृत हमारी ही एक भाषा है। जैसे कि––

'जब' 'तब' 'और' 'कब' की संस्कृत बताते समय यदि किसी पंजाबी-भाषी छात्र से पूछा जाए कि जब तब और कब को पंजाबी में क्या कहते हैं, तो वह स्वभावतः उत्तर देगा कि :––

'जदों' 'कदों' 'तदों'

इस पर यदि छात्र को यह समझाया जाय कि यह ––'जदों' 'तदों' और 'कदों, संस्कृत के ––

'यदा' 'तदा' और 'कदा'

हैं। तो उसे यह यदा, तदा, कदा अनायास ही स्मरण हो जायेंगे। इसी प्रकार– हम, की संस्कृत ,वयम्, और तुम की ,यूयम्,

यूं भले ही छात्र को याद न हो, पर यदि उसे यह पूछा जाये कि हम और तुम की इंगलिश क्या है, तो वह उत्तर देगा :––

वी (We) और यू (You)

अब यदि छात्र को यह समझा दिया जाये कि यह इंगलिश के वी (We) और यू (You) संस्कृत के वयम् और यूयम् हैं।

वी, 'We' और यू , You, के आगे अम् प्रत्यय लगकर वयम् और यूयम् बने हैं। इसी प्रकार क्या की संस्कृत यूं भले ही याद न हो या न हो, पर जब यह बतायें कि पंजाबी और बंगला आदि भाषाओं का 'की' और संस्कृत का 'किम्' एक ही है तो छात्र उसे अनायास पकड़ लेंगे।

इस प्रकार प्रत्येक पाठ में प्रयुक्त शब्दों का दूसरी भाषाओं में प्रचलित शब्दों के साथ एकरूपता की ओर ध्यान दिलाते हुए पाठ को रोचक और सरल बनाया जायेगा।

8 दृश्य श्रव्य सामग्री का उपयोग

पाठों को अधिक रोचक और आकर्षक बनाने के लिए दृश्य और श्रव्य सामग्री का यथास्थान उपयोग किया जायेगा। दृश्य सामग्री तो विद्यालयों के शिक्षकों को ही प्रस्तुत करनी होगी। विधुः के पाठ में अध्यापक महोदय कक्षा में विद्यार्थियों के समक्ष एक ऐसा रंगीन मानचित्र प्रदर्शित करेंगे जिस में चन्द्रमा और तारे दिखाए गये हों। इसी प्रकार दूसरे पाठों में भी सम्बद्ध नक्शे या चित्र आदि पहले से कक्षा में प्रदर्शित किए जायेंगे। ये चित्र मुद्रित भी हो सकते हैं अथवा श्यामपट पर अंकित किए जा सकते हैं। श्यामपट पर रेखा चित्र अंकित करने के लिए चित्रकला -अध्यापक का सहयोग भी लिया जा सकता है।

श्रव्य-सामग्री के रूप में पशु-पक्षियों की ध्वनियां झरनों का कलकल निनाद, मेघों की गर्जना आदि के ध्वनि-प्रभाव, पाठों में यथासमय दिए जायेंगे। दृश्य सामग्री के लिए कक्षा-अध्यापक महोदय से विशेष निवेदन है कि वे प्रत्येक पाठ के प्रारंभ में निर्दिष्ट दृश्य सामग्री अवश्य जुटा लें ताकि पाठ उचित रूप से प्रभावकारी ढंग से सुना जा सके।

9 श्लोक-पाठ

प्रायः देखा गया है कि आरंभिक कक्षाओं की तो बात ही क्या उच्च कक्षाओं के छात्र भी श्लोकों का ठीक ढंग से पाठ नहीं कर पाते। इसके लिए प्रत्येक पाठ के अन्त में एक श्लोक सिखाया जायेगा।

10 पुस्तक पर आधारित

ये पाठ संस्कृत विनोद, प्रथम भाग के पाठों पर आधारित होंगे और कक्षा के पाठों के साथ-साथ इन का ताल-मेल बना रहेगा।

207 AIR/71

प्रसारणों से अधिकाधिक लाभ कैसे उठाया जाय

प्रत्येक प्रसारण को निम्न तीन भागों में बांट दिया गया है :—

1 प्रारंभिक तैयारी

2 प्रसारण

3 प्रसारणोपरान्त चर्चा

1 प्रत्येक पाठ का प्रसारण बीस मिनट तक होगा। इसके पूर्व कक्षाध्यापक महोदय कक्षा में आवश्यक दृश्य सामग्री चित्र मानचित्र आदि जुटा लें और उन्हें किसी ऐसे स्थान पर रखें कि कक्षा के सब छात्र उसकी ओर ध्यान दे सकें। साथ ही प्रसारित पाठ की भूमिका भी छात्रों को बतला दी जाए। अच्छा हो कि सुभाषित-सैबन्धी श्लोक जो उस पाठ में सिखाया जाने वाला है, उस का भी कुछ पूर्वाभ्यास छात्र कर लें।

2 प्रसारण के समय इस बात का ध्यान रखें कि छात्रगण भली भांति प्रसारित पाठ को सुनते रहें, जहां छात्रों से किसी पद वाक्य या श्लोक को दुहराने के लिए कहा जाय उन्हें उस के दोहराने में सहयोग दीजिये। प्रसारण के समय जो पाठ प्रसारित हो रहा हो, छात्रों को कुछ भी लिखने या कोई बात नोट कर लेने के लिए उत्साहित मत किजिए। क्योंकि ऐसा करने से छात्रों का ध्यान पाठ को सुनते सुनते दूसरी ओर बट जाएगा और वे पूरा पाठ नहीं सुन पायेंगे।

3 प्रसारणोपरान्त चर्चा में प्रसारित पाठ के सम्बन्ध में छात्रों की कुछ शंकायें हों तो उनका समाधान किया जाये। और कोई बात समझ में न आई हो तो उसे पुन: समझाया जाये। इसी प्रकार पाठ में आए हुए सन्धियुक्त शब्दों की संधि-विच्छेद और शब्द और धातु रूपों के कारक और वचन आदि का अभ्यास भी हो सकता है। छात्र चाहें तो वे आकाशवाणी के संस्कृत शिक्षक से भी अपनी शंकाओं के समाधान पत्र लिख कर कर सकते हैं।

आकाशवाणी से प्रसारित होने वाले ये संस्कृत पाठ ऐसे पाठ नहीं हैं, जिन में श्रोता छात्र, मूक श्रोता मात्र बने रहें या कक्षाओं के अध्यापक निश्चेष्ठ होकर

अपनी-अपनी कक्षाओं में बैठे रहें। वास्तव में इन पाठों के प्रसारण में आकाशवाणी के स्टूडियो से पाठ प्रसारित करने वाले शिक्षक और पाठों में भाग लेने के लिए आए हुए छात्र, छात्राएं, तथा कक्षा के अध्यापक और श्रोता छात्रों का योग बराबर बना रहेगा। इस प्रकार यह पाठ त्रिकोणात्मक होंगे, इन पाठों से पूरा लाभ तभी मिल सकेगा जब कि कक्षा के अध्यापक महोदय और श्रोता छात्र भी पाठों को अपनाने के लिए उतने ही उत्पर और संबुद्ध हों, इसके लिए विद्यालय के प्रधानाचार्य, भाषा-अध्यापक, और श्रोता छात्र, इन तीनों को सचेष्ठ रहना होगा।

प्रधानाचार्य महोदय

आप से निवेदन है कि आकाशवाणी के पाठ प्रारंभ होने से पहले (19 जलाई से पूर्व) इस बात का प्रबन्ध करवा दें कि प्रसारण सुनने वाली कक्षाओं के लिए श्रवण की उचित व्यवस्था हो जाये। जिन विद्यालयों में स्पीकर लगे हुए हैं, वहां तो कोई विशेष अड़चन आती नहीं, पर जहां ऐसा प्रबन्ध नहीं वहां या तो कक्षा के सभी वर्गो (क,ख,ग आदि) के छात्रों को एक बड़े हाल में बैठा दिया जाए और वहां रेड़ियो सैट पर प्रसारण सुनने की व्यवस्था कर दी जाए। पर ऐसा करने में छात्रों को कक्षा से इधर-उधर लाने ले जाने में तो असुविधा होती ही है, साथ ही तीन चार वर्गों के सौ के सौ या उससे भी अधिक छात्रों को एक साथ बैठाकर उन सब का ध्यान पाठों की ओर बराबर बनाए रखना भी एक समस्या हो सकती है और फिर जब स्टूडियो-शिक्षक श्रोता छात्रो को कोई पद वाक्य या श्लोक दुहराने के लिए कहेगा तब तो यह और भी कठिन हो जाएगा। क्योंकि सौ के लगभग छात्र किसी वाक्य को एक साथ मिल कर शुद्ध बोल सकें यह बड़ा कठिन है। इसलिए यदि प्रत्येक कक्षा में स्पीकर की व्यवस्था न हो सके तो तीन चार ट्रांजिस्टरों या रेडियो सैट से काम चल सकता है। यह ट्रांजिस्टर प्रतिदिन आवश्यकतानुसार उन विभिन्न कक्षाओं में अनायास ले जाये जा सकते हैं। प्रसारण समाप्त हो जाने के बाद वहां से वापिस लाये जा सकते हैं और एक निश्चित स्थान पर लाकर सुरक्षित रूप से रखे जा सकते हैं।

प्रधानाचार्य महोदय, आप इसी प्रकार भाषा-शिक्षकों से प्रसारणों में कुछ पहले से विचार-विनिमय कर लें और बीच-बीच में भी प्रसारणों की उपयोगिता आदि के बारे में उनके विचार जानते रहें और प्रसारणों से पूरा लाभ उठाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित और प्रेरित करते रहें, तो आकाशवाणी के ये छात्रीय कार्यक्रम विशेष लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं।

तीसरे यह कि कार्यक्रम-सम्बन्धी इन पुस्तिकाओं के साथ इन प्रसारणो के सम्बन्ध में मूल्यांकन प्रपत्र भेजे जा रहे हैं, प्रधानाचार्य महोदय यदि यह देखते रहें कि यह मूल्यांकन प्रपत्र भर कर आकाशवाणी को यथासमय भेजे जा रहे हैं। इससे भी आकाशवाणी के अधिकारियों को कार्यक्रमों की उपयोगिता के बारे में बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

शिक्षक महोदयों से

इन संस्कृत पाठों की उपयोगिता बहुत कुछ आप शिक्षकों पर निर्भर करती है। पाठ प्रसारित होते समय भी इस बात का ध्यान रखें कि छात्रगण सावधानी से पाठ सुन रहे हैं और यह भी कि जहां और जब उन्हें किसी रूप वाक्य या पद अथवा श्लोक को दोहराने के लिए कहा जाए तो उन्हें ठीक ढंग से उन पदो और श्लोकों को दोहराने में मार्ग निर्देशन करें। इस प्रकार शिक्षक महोदय की सक्रियता पर ही वास्तविक रूप में इन पाठों की उपयोगिता निर्भर है।

श्रोता छात्रों से

और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि छठी कक्षा के जिन छात्रों के लिए ये संस्कृत-पाठ प्रसारित किये जा रहे हैं, वे उस में पूरी रुचि लें। जब उन्हें किसी शब्द या धातु के रूप अथवा श्लोक अथवा उसके किसी पद को दोहराने के लिए कहा जाए तो शुद्ध रूप से और संयुक्त रूप से उसे दोहरायें और प्रसारण समाप्त होने के पश्चात उन श्लोकों अथवा धातु या शब्द-रूपों को वहीं बैठे-बैठे ही दो चार बार दोहरा कर सरल करलें तथा प्रसारित विषय पर अथवा पाठ में आये हुए नये-नये शब्द रूपों पर शिक्षक महोदय से कुछ बातचीत या प्रश्नोत्तर कर अपनी शंकाओं का समाधान करते रहें, तो इन पाठों की उपयोगिता स्वतः सिद्ध हो जायेगी।

पाठ कैसे प्रसारित किये जायेंगे

प्रत्येक बृहस्पतिवार को छठी कक्षा के लिए निर्दिष्ट समय पर प्रसारित होने वाले ये पाठ चार भागों में विभक्त रहेंगे:

1 सर्वप्रथम वन्दना शीर्षक दो श्लोकों का सस्वर पाठ हुआ करेगा, इस समय श्रोतागण भी इन दोनों श्लोकों को ठीक लय और स्वर के साथ शुद्ध रूप में दोहरायेंगे, पर बोलकर नहीं मन ही मन में और इस प्रकार उस दिन के पाठ के लिए अपने आप को प्रस्तुत कर लेंगे।

2 वन्दना के सस्वर पाठ के अनन्तर स्टूडियो के छात्रगण और शिक्षक के अभिवादन और प्रत्यभिवादन तथा इसी से संबद्ध छोटी-मोटी

बातचीत सरल वाक्यों में होंगी और प्रसंग-प्राप्त ,संस्कृत विनोद के प्रथम भाग के उस दिन पढाए जाने वाले पाठ के बारे में हिन्दी में बातचीत की जायेगी।

3 पाठ से संबद्ध धातु और शब्दों के रूप तथा संधि-विच्छेद आदि के बारे में चर्चा की जायेगी।

4 और अन्त में एक श्लोक सिखाया जायेगा और उसका अर्थ समझाया जायेगा।

कक्षा में सुनने वाले छात्र इन पाठों में कैसे भाग लेंगे

आज का श्लोक

प्रत्येक पाठ के अन्त में बच्चों को एक श्लोक सिखाया जाएगा। इन श्लोकों की विशेषता यह है कि इन में प्रायः उन्हीं शब्दों पदों या क्रियाओं का प्रयोग किया गया है जो उस पाठ में या उस से संबद्ध पाठों में प्रयुक्त हुए हैं। पहले चार पाठों में एक ही श्लोक के कुछ पदों या,शब्दों को बदल कर चार रूपों में प्रस्तुत किया गया है। जैसे कि :—

पहले पाठ का श्लोक है, :—

प्रातर्नमति यो बालः मातरम् पितरम् गुरुम्।
अधिगच्छति नित्यं सः आर्युविद्यां यशोबलम्॥

इस में कर्त्ता और कर्म का एक वचन में प्रयोग किया गया है तो दूसरे पाठ में इसी श्लोक को बदल कर :—

प्रातर्नमन्ति ये लोकाः देवेशं पितरौ गुरून्।
अधिगच्छन्ति ते नित्यं आर्युविद्याम् यशो बलम्॥

कर दिया गया है।

इस में कर्त्ता के साथ ही कर्म और क्रियाएं भी बहुवचन की कर दी गई हैं। इन दोनों श्लोकों में इस प्रकार प्रथम पुरुष के एकवचन, द्विवचन, और बहु-वचन के रूप आ जाने पर छात्रों को मध्यम पुरुष के एक वचन का रूप सिखाने के लिए श्लोक को निम्न रूप दे दिया गया है :—

प्रातर्नमसि भक्त्या त्वं श्रीहरिं पितरौ गुरून्।
अधिगच्छसि नित्यं वै आर्युविद्यां यशो बलम्॥

और चौथे श्लोक में उत्तम पुरुष का प्रयोग किया गया है, जैसे कि :—

प्रातर्नमाम्यहं भक्त्या शंकरम् पितरौ गुरून्।
अधिगच्छानि नित्यं वै आर्युविद्यां यशो बलम्॥

पहले तीन श्लोकों में में लट् लकार का प्रयोग है तो चौथे श्लोक में लोट् लकार का प्रयोग किया गया है। इससे अर्थ में एक विशेषता आ गई है। मैं प्रातः काल भगवान शंकर, माता पिता, और गुरुजनों को प्रणाम करता हूं और उनसे आशीर्वाद मांगता हूं कि मुझे आयु विद्या यश और बल मिले। इसी प्रकार बच्चों को समझाने के लिए पहले श्लोक में मातरम् पितरम् दोनों अलग-अलग शब्दों का प्रयोग किया गया है कि वे माता पिता दोनों को प्रणाम करें। पर अगले श्लोकों में द्विवचन के रूप पितरौ का प्रयोग किया गया है। ताकि बच्चे यह समझ जायें कि पितरौ शब्द का अर्थ माता पिता दोनों होते हैं। और इसी बहाने पुंलिग द्विवचन का औ वाला रूप भी याद करलें, इसी प्रकार पहले श्लोक में गुरुम् इस एक वचन पद का प्रयोग किया गया है, पर अगले श्लोकों में गुरून् यह बहुवचनान्त रूप है ताकि बच्चों को समझाया जा सके कि अपने से बड़े सब लोगों को गुरु या गरुजन कहते हैं केवल अध्यापक को ही नहीं। और साथ ही यह भी कि जितने भी अध्यापक हों उन सब को प्रणाम किया जाना चाहिए।

इसी प्रकार अगले पाठों में भी प्रत्येक श्लोक में कुछ कुछ विशेषता है। दसवें ग्यारहवें पाठ के बाद जो श्लोक दिए गये हैं, वे प्रायः सब के सब संस्कृत विनोद प्रथम भाग से ही उद्धृत किये गये हैं, इस प्रकार बच्चे अपने पाठों में आये हुए श्लोकों को प्रति सप्ताह एक एक करके बातों ही बातों में याद भी कर लेंगे और उनका अर्थ भी समझ जायेंगे।

प्रत्येक श्लोक के एक-एक पद को पहले स्टुडियो में उपस्थित शिक्षक और छात्र तीन-तीन बार पढेंगे। और फिर चौथी बार कक्षा में श्रोता छात्रों को ठीक उसी ढंग से पहले श्लोक के प्रत्येक पद को अलग-अलग और फिर अन्त में पूरे श्लोक को दोहराने के लिए कहा जाएगा। इस तरह कक्षा में उपस्थित भाषा-शिक्षक के साथ-साथ श्रोता छात्र भी पहले श्लोकों के अलग-अलग चारों पदों को और अन्त में पूरे श्लोक को सस्वर पढेंगे। इन पदों को जिस समय कक्षा के छात्र पढ़ रहे होंगे उस समय (श्लोकों या पदों के पाठ-कालः दस बीस सैकिण्ड) तक स्टूडियो-शिक्षक मौन रहेगा। यह कहने पर :—

अब आप बोलिये

कक्षाओं के छात्र श्लोक या उसके पद को दोहरायेंगे।

श्रोता-छात्रों के श्लोक या वाक्य दोहराने के बाद स्टूडियो-शिक्षक कहेंगे, बहुत सन्दर या बहुत अच्छा। और तब श्लोक का अर्थ आदि अगला कार्यक्रम या पाठ का शेषांश प्रस्तुत किया जायेगा। इसी प्रकार शब्द या धातु के रूप और सन्धि आदि के सम्बद्ध पद और वाक्य भी जो छात्रों को याद कराये जायेंगे उन्हें पहले

स्टूडियो के शिक्षक और छात्र तीन बार बोलेंगे और चौथी बार कक्षा में उपस्थित श्रोताछात्रों से "अब आप बोलिये" कहकर बोलने के लिये कहा जायेगा उस समय छात्रों को तदनुरूप शुद्ध-शुद्ध शब्दों के उच्चारण के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित किया जाये। शब्दों या वाक्यों के कक्षा के छात्रों द्वारा बोले जाने के समय स्टूडियो के शिक्षक और छात्र मौन रहेंगे। और उसी प्रकार बहुत सुन्दर कहने के बाद पाठ का अगला अंश आरम्भ किया जायेगा।

पाठ में रोचकता बराबर बनी रहे और छात्रों को वह पाठ बातों ही बातों में याद भी हो जाये, इसके लिये यह पाठ स्टूडियो के शिक्षक और वहां उपस्थित छात्रों के मध्य बातचीत के रूप में प्रसारित किये जायेंगे। और छात्रों को अधिक से अधिक बोलने तथा समझाने का पूरा-पूरा अवसर दिया जायेगा।

श्लोक को श्यामपट पर लिख दें

किस पाठ के साथ कौन सा सुभाषित सिखाया जायेगा इसकी पूर्व जानकारी देने के उद्देश्य से इस पुस्तिका में दिए गये पाठों की रूपरेखा के साथ सुभाषित भी दे दिया गया है। जैसा कि आप देखेंगे यह सुभाषित जहां एक ओर छात्रों के चरित्र-निर्माण में सहायक हैं, वहां दूसरी ओर इनकी भाषा भी इतनी सरल है कि छात्रों को उनका अर्थ समझने में कुछ कठिनाई नहीं होगी।

सुभाषितों को छात्रगण ठीक ढंग से याद कर सकें, इस के लिए शिक्षक महोदयों से निवेदन है कि वे उस दिन पढ़ाये जाने वाले श्लोक को श्याम पट पर पहले से लिख दें और साथ ही उस दिन पुस्तक का कौन सा पाठ प्रसारित किया जा रहा है उसका शीर्षक भी निम्न प्रकार से लिख दें। जैसे––

2-9-71

आकाशवाणी कार्यक्रम 7

उत्तम पुरुष

आज का श्लोक

प्रतर्नमामि पितरं मातरं च नमाम्यहम् ।
आवमपि नमावस्तौ नमामश्च वयं गुरून् ।।

और इस श्लोक के नीचे यह भी लिख दें कि, जब कहा जाये कि
'अब आप बोलिये'
तो कक्षा के छात्र उस पद या श्लोक को मिलकर बोलेंगे।

आकाशवाणी की ओर से प्रत्येक विद्यालय को जहां कार्यक्रमों के सुनाये जाने की व्यवस्था है, दैनिक कार्यक्रम-चार्ट और कार्यक्रम-निर्देशिका पुस्तिकाएं

सत्र के आरम्भ में ही भेज दी जाती हैं। यदि आपको उक्त सामग्री समय पर न मिल पाये तो -----

केन्द्रनिदेशक, आकाशवाणी, दिल्ली।

को एक पत्र लिख कर यह सामग्री मंगवा ली जाये।

कक्षाओं के समय-विभाग में आकाशवाणी के कार्यक्रमों का समावेश हो सके, इस उद्देश्य से आकाशवाणी के कार्यक्रमों में उनके प्रसार- समय और जिन जिन कक्षाओं के लिए वे प्रसारित किए जाते हैं, उनकी सूची पहले ही प्रकाशित कर दी जाती है। इस पुस्तिका के अन्तिम पृष्ठ पर भी आप यह सूची देख सकते हैं।

छठी कक्षा के संस्कृत और सातवीं की हिंदी एवं आठवीं कक्षा के सामान्य ज्ञान के अध्यापकों के पास आकाशवाणी की कार्यक्रम की पुस्तिकाएं रहनी ही चाहिएं। इन से प्रसारणों से पूरा-पूरा लाभ उठाने में सहायता मिलेगी।

प्रसारण के समय कोई अड़चन न आए :

कक्षा के दरवाजे पर यदि कार्यक्रम-श्रवण सम्बन्धी कुछ संकेत लगा दिया जाया करे तो कोई बाहर का व्यक्ति कक्षा में आकर प्रसारण के सुनने में विघ्न नहीं डालेगा। जैसे कि जब कक्षा कार्यक्रम सुन रही हो तो दरवाजे पर एक सूचना पट लगा दिया जाय, जिस पर लिखा हो--

कृपया शोर न करें प्रसारण चल रहा है

कार्यक्रम की सफलता

कार्यक्रमों की सफलता तथा उपयोगिता इस बात पर निर्भर करती है कि अध्यापक महोदय कार्यक्रम में कितनी रुचि लेते हैं। इस सम्बन्ध में कोई विशेष नियम निर्धारित नहीं किए जा सकते। आप स्वयं कार्यक्रम सुनते सुनते अपने अनुभव के आधार पर जब जैसा उचित समझें तदनुसार कार्यक्रम से अधिकाधिक लाभ उठाने की व्यवस्था कर सकते हैं।

शिक्षकों व विद्यार्थियों से दो शब्द

शिक्षा के सर्वांगीण विकास के लिए पुस्तकीय ज्ञान पर्याप्त नहीं है। आधुनिक विज्ञान ने ज्ञान-संग्रह के अनेक नये और शक्तिशाली माध्यम प्रस्तुत किये हैं, जिन में रेडियो की उपयोगिता को शिक्षा-शास्त्रियों ने अन्यतम माना है। आकाशवाणी शिक्षा के क्षेत्र में अपने इसी कर्त्तव्य की अधिकाधिक पूर्ति के विचार से छात्रीय कार्यक्रमों का आयोजन करती चली आ रही है। ये कार्यक्रम अपने उद्देश्य को सफल बनाने के लिए जाग्रत विद्यार्थियों और प्रबुद्ध अध्यापकों से अधिकाधिक सहयोग की अपेक्षा रखते हैं। यदि अध्यापकगण कार्यक्रम प्रसारित होने के पूर्व छात्रों को उसका कुछ परिचय दे दिया करें और कार्यक्रम के समाप्त होने पर सम्बन्धित विषय पर छात्रों के साथ वार्त्तालाप कर लें, तो ये कार्यक्रम छात्रों के ज्ञानवर्धन में और भी अधिक सहायक सिद्ध होंगे। इस सत्र का उद्घाटन दिनांक 19 जलाई 1971 को होगा।

जैसाकि कार्यक्रमों की रूपरेखा के अध्ययन से स्पष्ट होगा, श्रोता विद्यार्थियों और अध्यापकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों के इन कार्यक्रमों में आमूल परिवर्तन कर दिया गया है। जैसे कि :--

अब ये कार्यक्रम माध्यमिक और उच्चतर कक्षाओं के लिए मिले जुले न होकर प्रत्येक कक्षा के लिये अलग-अलग प्रसारित किये जायेंगे। साथही यह भी कि एक-एक कक्षा के लिए प्रथक-प्रथक विषयों से सम्बद्ध कार्यक्रम सुनाए जायेंगे। छठी कक्षा के लिए अंग्रेजी, और संस्कृत, सातवीं कक्षा के लिए हिन्दी और आठवीं कक्षा के लिए सामान्य ज्ञान के कार्यक्रम प्रसारित किये जायेंगे। इस प्रकार अब ये कार्यक्रम प्रत्येक कक्षा के लिये अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होंगे, क्योंकि कक्षा से सम्बद्ध विषय ही प्रसारित किये जायेंगे। इसके अतिरिक्त प्रत्येक कक्षा के लिए एक निश्चित विषय निर्धारित कर दिया गया है, इसलिए श्रोता विद्यार्थियों की उत्सुकता और कार्यक्रमों के प्रति रुचि बराबर बनी रहेगी। कक्षा के प्रबन्धक अध्यापको का कार्यभार भी इससे बहुत सुविधाजनक हो जायगा। अब प्रत्येक कक्षा के तत् तद् विषय के अध्यापक गण अपने-अपने विषयों के कार्यक्रमों को छात्रों को सुनाने में सदा उत्साहित रहेंगे।

आकाशवाणी से प्रसारार्थ विषय भी वे चुने गए हैं जो शिक्षाप्रद होने के साथ-साथ पर्याप्त रोचक भी हैं। पुस्तकों में नियत विषयों या पाठों को प्रस्तुतीकरण का ढंग बहुत रोचक रहेगा। एक ही विषय को रूपक, यात्रावर्णन, पत्र या सोदाहरण वार्त्ता (जिसमें कविताओं को सस्वर-पाठ या संगीत के रूप में प्रस्तुत किया जाता है) के रूप में जब प्रसारित किया जाता है, तो उसमें एक नवीनता आ जाती है और प्रतिपाद्य विषय अत्यन्त सुबोध और सरल ढंग से छात्रों को अनायास ही समझ में आ जाता है। इस प्रकार आशा है कि आकाशवाणी के ये कार्यक्रम अब छात्र-छात्राओं के लिये पर्याप्त उपयोगी सिद्ध होंगे। और शिक्षा संस्थाएं इनसे पूरा-पूरा लाभ उठायेंगी।

शिक्षा-संस्थाओं तथा अध्यापक-वन्धुओं के लाभार्थ आकाशवाणी -कार्यक्रमों की इन पुस्तिकाओं में छठी श्रेणी की अंग्रेजी, तथा संस्कृत और सातवीं की हिन्दी का दैनिक पाठ्यक्रम भी प्रस्तुत कर दिया गया है और यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि आकाशवाणी के कार्यक्रम कक्षाओं के पाठ्यक्रम के साथ ही साथ चलेंगे। इस वर्ष छठी कक्षा के लिये संस्कृत विनोद, प्रथम भाग पर आधारित 30 संस्कृत पाठ प्रसारित किए जाएंगे।

प्रसारणों की रूपरेखा

प्रथमः पाठः

दिनांक 22 जुलाई, 71

संस्कृत पाठ का प्रारम्भ

सरस्वती वंदना :

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदंडमंडितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिः देवैः सदा वंदिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निश्शेषजाड्यापहा ॥1॥

कामना

वयं मातृभूमेः सुताः पुण्यभूमेः
प्रतिष्ठात्र देशे विदेशे च यस्याः ।
ऋषीणां मुनीनां कवीनां च माता
भवेद् रक्षकः सृष्टिकर्ता विधाता ॥2॥
सुधीराः सुवीराः च नम्राः सविद्याः
धनेनापि युक्ताः वयं निर्धनाः वा ।
सदा सेवकाः भारतस्यास्य भूत्वा
धनं जीवनं चार्पयामैतदर्थम् ॥3॥

2 बालक पत्र, पुष्प, फल, जल, माता पिता, आदि प्रचलित नामों और पठ, लिख, खेल, चल, चर, हस, आदि क्रिया रूपों से बने हुये छोटे-छोटे वाक्यों के द्वारा छात्रों को यह बताने का प्रयत्न किया जायेगा कि हिन्दी भाषा भाषी बच्चों के लिए संस्कृत बिल्कुल उनकी अपनी भाषा है और उसे पढ़ने सीखने में तथा याद करने में कुछ विशेष परिश्रम नहीं करना पड़ता।

3 आज का श्लोक :—

प्रातर्नमति यो बालः मातरम् पितरम् गुरुम् ।
अधिगच्छति नित्यं स आर्युविद्यां यशो बलम् ।।

द्वितीयः पाठः

29 जुलाई, 1971

सामान्य परिचय 2

1 कामना के श्लोक ।

2 घृत, दुग्ध, हस्त मुख, अक्षि, कर्ण, जैसे संस्कृत शब्दों तथा उन के घी, दूध, हाथ, मुंह, आंख, कान, नाक, आदि हिन्दी में प्रचलित रूपों की एकरूपता समझाते हुए इस पाठ में संस्कृत के लता चलति, गौ चरति, जलं वर्षति, जैसे कर्त्ता और, क्रिया वाले छोटे-छोटे वाक्यों के द्वारा संस्कृत की सरलता और सुबोधता के संबन्ध में चर्चा की जायेगी।

3 आज का श्लोक :—

प्रातर् नमन्ति ये लोकाः देवेशं पितरौ गुरून् ।
अधिगच्छन्ति ते नित्यम्, आर्युविद्यां यशो बलम् ।।

तृतीयः पाठः

5 अगस्त, 1971

सामान्य परिचय 3

1 कामना के श्लोक।

2 यदा, तदा, कदा, किम्, और स्थले जैसे रूपों के साथ पंजाबी के जदों, तदों, कदों, कि, थल्ले, आदि शब्दों से संबन्ध दिखाते हुए और इसी प्रकार हिन्दी के नाम रूपों और क्रिया रूपों में समता बतला कर संस्कृत की सुबोधता और सरलता को भली-भाँति समझाया जायेगा।

3 आज का श्लोक:—

प्रातर्नमसि त्वं भक्त्या श्रीहरिं पितरौ गुरून् ।
अधिगच्छसि नित्यं वै आयुर्विद्यां यशो बलम् ।।

चतुर्थः पाठः

12 अगस्त, 1971

सामान्य परिचय 4

1 कामना के श्लोक।

2 सरला पत्रम् लिखति, बालकः फलम् खादति, मोहनः पुस्तकम् पठति, जैसे कर्त्ता, कर्म और क्रिया से युक्त छोटे-छोटे वाक्यों के द्वारा संस्कृत की सरल वाक्य रचना का अभ्यास कराया जायेगा।

पुरुषों का ज्ञान :—

प्रथम पुरुष मध्यम पुरूष तथा उत्तम पुरुष का सामान्य ज्ञान।

बच्चो, अब इस समय आप जब संस्कृत पढ़ना आरम्भ कर रहे हैं तो आज हम तुम्हें पुरुष कितने होते हैं, इसका ज्ञान करवा एंगे।

मान लो कि हम तीन मनुष्य आपस में बात कर रहे हैं।

प्रश्न : कितने मनुष्य आपस में बात कर रहे हैं।

उत्तर : तीन

शिक्षक : बिल्कुल ठीक। अब देखें कि यह तीन कौन-कौन हैं। इन में से एक में हूँ एक तू है जो पूछ रहा है और एक शीला है जो मेरेसामने बैठी सुन रही है। और इस पाठ में भाग ले रही है। इस शीला को हम "यह" भी कह सकते हैं।

प्रश्न : कौन कौन इस बातचीत या वार्त्तालाप, में भाग ले रहे हैं।

उत्तर : मैं तू तथा शीला या यह।

शिक्षक : अब इस में से मैं को संस्कृत भाषा में उत्तम पुरुष कहा जाता है।

प्रश्न : मैं को क्या कहा जाता है?

उत्तर : उत्तम पुरुष।

शिक्षक : तू को मध्यम पुरुष के नाम से पुकारते हैं।

प्रश्न : अच्छा बच्चो मैं अगर उत्तम पुरुष है तो तू कौन सा पुरुष है?

उत्तर : मध्यम पुरुष।

शिक्षक : चलिए अब शीला या यह अथवा वह का पुरुष भी खोज निकालें, इसको हम प्रथम पुरुष या अन्य पुरुष के नाम से जानते हैं। जो न मैं हुँ न तू है, वह शीला या वह है, तथा संस्कृत भाषा का प्रथम पुरुष है। आशा है कि आप अब समझ गए होंगे

कि मैं उत्तम पुरुष

तू मध्यम पुरुष

तथा वह प्रथम पुरुष है।

संस्कृत में बच्चो "वह" सबसे पहले आता है, और उसे सः कहते हैं। मध्यम पुरुष तो है ही बीच का और उसके लिए संस्कृत शब्द त्वम् है।

अन्त में उत्तम पुरुष आता है यानी मैं और संस्कृत में इसे ,अहम् कहते हैं। जैसे इंगलिश में होता है वैसे संस्कृत में स : त्वम् और अहम् होता है, इन तीनों को क्रमश : प्रथम पुरुष मध्यम पुरुष व उत्तम पुरुष के नाम से पुकारते हैं।

एक बात और बता दें कि यह तीनों पुरुष तीन बचनों में पाये जाते हैं एक-वचन द्विवचन व बहुवचन। जब एक मनुष्य हो तो एकवचन। जब दो हों द्विवचन और जब दो से ज्यादा हों तो बहुवचन। बच्चे, जैसे हम हिन्दी में कहते हैं, वह भागता है तो संस्कृत में कहेंगे सः धावति। यह एक वचन का उदाहरण है। हिन्दी में कहेंगे वे भागते हैं, तो संस्कृत में होगा, ते धावन्ति। हिन्दी में हम ऐसा नहीं कहते कि वे दो भागते हैं। परन्तु संस्कृत में दो के लिए अलग वचन होता है जैसे तौ धवतः।

तो जहां हिन्दी में दो ही वचन होते हैं संस्कृत में तीन वचन होते हैं। द्विवचन संस्कृत भाषा की अपनी ही विशेषता है।

जैसे मैं कहूं, सः धावति

वे दो भागते हैं, तौ धावतः

वे सब भागते हैं, ते धावन्ति

यह तीनों प्रथम पुरुष के तीनों वचनों को स्पष्ट करते हैं।

इसी प्रकार मध्यम पुरुष व उत्तम पुरुष भी तीन वचनों में पाए जाते हैं। मध्यम पुरुष के रूप हैं, त्वम्, युवाम्, यूयम् अर्थात् तुम, तुम दो और तुम सब।

उत्तम पुरुष के भी इसी प्रकार रूप बनते हैं:

अहम्, आवाम्, वयम्,यानी मैं, हम दो व हम सब।

और अन्त में आप जान लें कि क्रियाएं भी संस्कृत में पुरुष व उस पुरुष के बचन के अनुपात से लगती हैं। इसी को आगे स्पष्ट किया जायेगा। आज के लिए इतना ही याद रखो कि पुरुष कितने हैं और उनके कितने वचन होते हैं।

आज का श्लोक :—

प्रातर्नमाम्यहं भक्तया शंकरं पितरौ गुरून्।
अधिगच्छानि नित्यं वै आयुर्विद्यां यशो बलम् ॥

पंचमः पाठः

19 अगस्त 1971

प्रथम पुरुष पुंलिंग, स्त्रीलिंग

1 कामना के श्लोक

2 प्रस्तावना, वार्तालाप विधि द्वारा अध्यापक छात्रों में वह के संस्कृत शब्द को जानने की उत्सुकता जाग्रत करेगी।

3 सः शब्द का प्रयोग।

4 वह सः को प्रथम पुरुष कहते हैं, इस को समझाया जाये गा।

5 प्रथम पुरुष के तीनों वचनों का स्पष्टीकरण, वाक्यों के अभ्यास द्वारा जैसे :–

सः गच्छति
तौ गच्छतः
ते गच्छन्ति।
सः चलति
तौ चलतः
ते चलन्ति।

छोटे वाक्यों का अभ्यास कराया जायगा जिससे कि प्रथम पुरुष के एक वचन द्विवचन व बहुवचन का स्पष्टीकरण पूर्णतया हो जाये।

6 छात्रों को केवल संस्कृत के द्विवचन की विशेषता समझाई जायेगी। हिन्दी में केवल दो वचन होते हैं, परन्तु संस्कृत में दो मनुष्यों के लिए विशेष रूप से द्विवचन का प्रयोग किया जाता है।

7 जिस प्रकार सः तौ ते पुंल्लिग तद् के तीन वचन हैं। स्त्रीलिंग में इन के रूप भिन्न होते हैं : सा ते ताः। परन्तु इनका प्रयोग भी ठीक उसी रूप से किया जाता है। जिस रूप से सः तौ ते का। अर्थात् यह स्त्रीलिंग प्रथम पुरुष के रूप हैं।

8 अभ्यास द्वारा इस तत्व का स्पष्टीकरण किया जायगा।

सा गच्छति सा चलति ।

ते गच्छतः ते चलतः ।

ताः गच्छन्ति ताः चलन्ति ।

9 आवृत्ति अनुवाद विधि द्वारा।

10 आज का श्लोक :—

पत्रं लिखति देवेन्द्रः लता क्रीडति प्रांगणे ।
छात्रा पठन्ति कक्षायाम् गुरवः पाठयन्ति तान् ।

षष्ठः पाठः

26 अगस्त 1971

मध्यम पुरुष पुंल्लिग

1 कामना के श्लोक।

2 प्रस्तावना :—अध्यापक वार्तालाप विधि द्वारा छात्रों से ही जानने कि चेष्ठा करेंगें कि तू के लिये संस्कृत में क्या शब्द है व उस का प्रयोग कैसे होता है।

3 तू को त्वम् कहते हैं : व मध्यम पुरुष किसे कहते हैं यह अच्छी तरह से समझाया, जायगा।

4 युष्मद् के तीनों वचनों का स्पष्टीकरण व प्रयोग वाक्यों की सहायता से। जैसे :—

त्वम् पठसि
युवाम् पठथः
यूयम् पठथ इत्यादि ।

5 इस बात को स्पष्ट किया जायेगा कि इस में पुंल्लिग, स्त्रीलिंग के दो रूप नहीं पाये जाते। दोनों ही के लिये एक ही रूप का प्रयोग किया जाता है।

6 स्पष्टीकरण के लिए छोटे छोटे वाक्यों का अभ्यास।

7 आज का श्लोक :—

त्वं क्रीडसि कदा मित्रैः युवां किं पठथोऽधुना ।
यूयं नमथ कान् प्रातः सायं च संस्कृतं गुरून् ।

सप्तमः पाठः

2 सितम्बर, 1971

उत्तमपुरुष

1 कामना के श्लोक।

2 प्रस्तावना । मैं के लिए संस्कृत शब्द ।

3 शब्दों का तुलनात्मक दृष्टिकोण।

4 उत्तम पुरुष में अस्मद् का प्रयोग किया जाता है।

5 उत्तम पुरुष के तीनों वचनों के रूपों का स्पष्टीकरण वाक्यों द्वारा ।

अहम् पठामि
आवाम् पठावः ।
वयम् पठामः इत्यादि ।

6 स्त्रीलिंग में भी यही रूप मिलते हैं। इस का स्पष्टीकरण मध्यम पुरुष के पाठ की याद दिलवाकर किया जायेगा।

7 आज का श्लोक :

प्रातर्नमामि पितरम् मातरं च नमाम्यहम् ।
आवामपि नमावस्तौ नमामश्च वयम् गुरून् ।

अष्टमः पाठः

9 सितम्बर, 1971

कर्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)
कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति)

1 कामना के श्लोकों का वाचन।

2 सिंहः गर्जति सुरेशः क्रीडतिआदि पंक्तियों का अध्यापक द्वारा आदर्श पाठ। स्टूडियो के छात्रों के साथ कक्षा के छात्रों द्वारा तीन वार पाठ।

3 वाचन के पश्चात कुछ शब्दों जैसे : सिंहः अजः अनलः पवनः सूदः इत्यादि का अर्थ बतलाया जायेगा।

4 तत्पश्चात् सूदः अजः इत्यादि को कर्ता क्यों कहा गया है, इसका स्पष्टीकरण किया जायेगा। कर्ता का चिन्ह बताया जायेगा। इसी प्रकार आगे की पंक्तियां जो कि प्रथमा के द्विवचन व बहुवचन को स्पष्ट करती है, पढाई जायेंगी।

जैसे :––अश्वौ शीघ्रम् धावतः, सुरेशः रमेशः च क्रीडतः। (द्विवचन)
सिहाः गर्जन्ति, मृगाः धावन्ति (बहुवचन)
तत्पश्चात आवृत्ति करवाई जायेगी : (प्रश्न उत्तर विधि द्वारा)

व्याकरण भाग :

कुछ अकारान्त शब्द बताए जाएंगें । अनल, सिह, नर, अज।
प्रथमा और द्वितीया के तीनों वचनों में रूप पूछे जाएंगे।

आज का श्लोक :––

गर्जतीह यदा सिंहो, धावन्ति हरिणा शशाः ।
मेघा गर्जन्ति चाकाशे , लोका नृत्यन्ति र्हषिताः ।

नवमः पाठः

16 सितम्बर, 1971

करण कारक (तृतीया विभक्ति)
अकारान्त पुंल्लिग शब्द

1 कामना के श्लोक।

2 कुछ मुख्य पंक्तियों का आदर्श वाचन।

3 छात्रों द्वारा तीन बार अध्यापक के साथ पाठ
(उच्चारण की दृष्टि से)

4 तृतीया या करण कारक का तीनों वचनों में स्पष्टीकरण : चिन्ह से भी समझाया जायेगा ।

चरणेन चरणाभ्याम्, चरणैः, नेत्रेण, नेत्राभ्याम् नैत्रेः इत्यादि।

सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

अकारान्त पुंल्लिग शब्द

2 उच्चारण की दृष्टि से अध्यापक द्वारा आदर्श पाठ।

3 छात्रों द्वारा अनुकरण पाठ, तीन बार।

4 सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति) व उस का चिन्ह 'के लिये' स्पष्ट किए जायेंगे। जैसे : याचकाय, विजयाय, प्रकाशाय, देशाय ।

5 सम्प्रदान कारक के तीनों वचनों को समझाया जायेगा । जैसे :

1 नराय, नराभ्याय् नरेभ्यः ।
2 देशाय देशाभ्याम् देशेभ्यः । ....

3 छात्राय छात्राभ्याम् छात्रेभ्यः ।

आज का श्लोक :—

रामः लिखति हस्तेन नेत्रैः पश्यन्ति मानवाः ।
निर्धनाय धनं देहि गच्छ त्वं पठनाय च ।

दशमः पाठः

7 अक्तूबर, 1971

अपादान कारक (पंचमी विभक्ति)
अकारान्त पुंल्लिग शब्द

1 कामना के श्लोक।

2 अध्यापक द्वारा आदर्श पाठ।

3 छात्रों द्वारा अनुकरण पाठ।

4 पंचमी का उदाहरणों द्वारा तीनों वचनों में स्पष्टीकरण :

1	ग्रामात्	ग्रामाभ्याम्	ग्रामेभ्यः
2	नरात्	नराभ्याम्	नरेभ्यः
3	देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्यः

5 पंचमी व तृतीया का भेद जब कि हिन्दी में चिन्ह दोनों का एक ही 'से' होता है,

करणः से, सहितः सा कलमेन लिखति।

पंचमी : से, अलग होना, छात्रः विद्यालयात् आगच्छति ।

षष्ठी विभक्ति (संबन्ध कारक)

अकारान्त पुंल्लिग शब्द

1 अध्यापिका द्वारा आदर्श पाठ।

2 छात्रों द्वारा अनुकरण पाठ।

3 संबन्ध (षष्ठी विभक्ति) के चिन्ह : का के की, रा रे री, का स्पष्टीकरण।

4 तत्पश्चात् तीनों वाक्यों के रूप पाठ की सहायता से समझाये जायेंगे, ।

रमस्य रामयोः रामाणाम्

भ्रमरस्य, सूर्यस्य, कमलस्य, छात्राणाम्, जनानाम् इत्यादि के प्रयोग ।

6 आवृत्ति अनुवाद द्वारा जैसे, राम का, नर का, भ्रमर का की संस्कृत बताओ (द्विवचन, बहुवचन, में भी)

आज का श्लोक :

शालां गच्छ गृहात् शीघ्रम् , पाठम् अध्यापकात् पठ,,।
पश्य वृक्षस्य पत्राणि पुष्पाणि च फलानि च ।

एकादशः पाठः

14 अक्तूबर, 1971

अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

अकारान्त पुंल्लिंग शब्द

1 कामना के श्लोक ।

2 अध्यापक द्वारा आदर्श पाठ ।

3 छात्रों द्वारा अनुकरण पाठ ।
सप्तमी में प्रयोग किये गए वभिन्न शब्दों को बताते हुये सप्तमी के चिन्ह का स्पष्टीकरण (में पर) ।

5 सप्तमी के तीनों वचनों का पुस्तक की सहायता से स्पष्टीकरण ।

6 अनुवाद विधि से आवृत्ति ।

संबोधन अकारान्त पुंल्लिग शब्द ।

1 इस पाठ को वार्तालाप अथा नाटक शैली से पढ़ाया जायैगा । शिक्षक तो पढ़े ही, छात्रों में से भी किसी से छात्र की पंक्तियां पढ़वाई जायेंगी । इस में एक दूसरों को संबोधित करने में संबोधन कारक का स्पष्टीकरण सुगमता से हो सकेगा ।

2 संबोधन कारक का तीनों वचनों में स्पष्टीकरण ।

3 आवृत्ति ।

आज का श्लोक :

वने वृक्षाः सुशोभन्ते शालायां चैव बालकाः ।
छात्रा विद्यालये नित्यं खेलन्तु च पठन्तु च ।।

द्वादशः पाठः

27 अक्तूबर, 1971

अकारान्त नपुंसक लिंग शब्द

1 कामना के श्लोक ।

2 अध्यापिका द्वारा आदर्श पाठ ।

3 छात्रों द्वारा अनुकरण पाठ ।

4 छात्रों को समझाया जायेगा कि किस प्रकार संस्कृत में तीन लिंगों का प्रयोग किया जाता है :

पुंलिग	स्त्री लिंग
राम	सीता
नर	नारी
सेठ	सेठानी

परन्तु संस्कृत में कुछ (फल, आम्र) शब्द ऐसे हैं जो न पुंल्लिग के अन्तर्गत आते हैं न स्त्रीलिंग के । ऐसे शब्द नपुंसक लिंग वर्ग में आते हैं, जैसे आम्र फल हिन्दी में तो पुंल्लिग शब्द हैं परन्तु संस्कृत में इन्हें नपुंसक लिंग के अन्तर्गत माना जाता है ।

5 तत्पश्चात् पुस्तक की सहायता से इस का प्रयोग सिखाया जायेगा । नपुंसक लिंग शब्दों की पहचान क्रमशः अभ्यास से हो जाती है ।

6 नपुंसक लिंग शब्दों के रूप प्रथमा और द्वितीया को छोड़ कर शेष विभक्तियों में अकारान्त पुंलिग शब्दों के समान ही होते हैं । इस को पाठ की सहायता से समझाया जायेगा ।

7 आवृत्ति । शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करवाया जायेगा ।

आज का श्लोक :—

नित्यं जलानि यच्छन्ति, पत्नपुष्पफलानि च ।
सुखान्नवस्त्रद्रव्याणि, मेघाःवृक्षाश्च दानिनः ।

त्रयोदशः पाठः

28 अक्तूबर, 1971

"सायंकाल":
तथा
"भविष्यत्काल":

1 कामना के श्लोक ।

2 प्रस्तावना । सायंकाल के विषय में छात्रों से पूछा जायेगा । तत्पश्चात् पाठ पढ़ाने में सुविधा होगी ।

3 अध्यापिका द्वारा आदर्श पाठ ।

4 छात्रों द्वारा अनुकरण पाठ ।

5 कुछ शब्दों का अर्थ बताया जायेगा ।
—म्लानानि, कुमुदानि, नक्षत्र: क्रीडाक्षेत्रम् ।

6 भविष्यत्काल :– लृट् लकार को पुस्तक की सहायता से समझाया जायेगा ।

7 वाक्य पूर्ति द्वारा आवृत्ति ।

8 आज का श्लोक :—

आगमिष्यति यत् पत्रं तच्छात्रान् तारयिष्यति ।
यः पठिष्यति यत्नेन स उत्तीर्णो भविष्यति ॥

चतुर्दशः पाठः

4 नवम्बर, 1971

चतुर बाला (आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द)

1 कामना के श्लोक ।

2 प्रास्तावना––इस में कुछ बालिकाओं से उन के नाम पूछे जायेंगे जो आकारान्त होंगे उन्हें चुनकर अध्यापिका छात्रों का ध्यान उस ओर आर्कषित करेंगीं । जैसे : रमा, सुलेखा, कान्ता, सरला, ये सब नाम आकारान्त स्त्री लिंग शब्द हैं । इन्हीं शब्दों का प्रयोग संस्कृत भाषा में कैसे किया जाता है उस के स्पष्टीकरण के लिये यह पाठ पढ़ाया जायेगा ।

3 पाठ का अध्यापिका द्वारा आदर्श पाठ ।

4 कुछ शब्दों के अर्थ व विवेचन, जनक:, अम्बा, सुलेखा, वस्त्राणि, फलम्, परिहास : स्मरति ।

5 आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के उदाहरण देते हुए विभिन्न विभक्तियों में उन का प्रयोग समझाया जायेगा ।

6 आवृत्ति, पाठ में सुलेखा के कार्यों का वर्णन ।
छोटे-छोटे संस्कृत के प्रश्न पूछे जायेंगे ।

जैसे :—–

1 सुलेखा कुत्र अगच्छत् ?

2 : सुलेखा किम् खादित ।

3 : उर्मिला किं लिखति।

इस से आकारान्त शब्दों का प्रयोग छात्रों को कहां तक स्पष्ट हुआ है यह भी पता लग जायेगा ।

आज का श्लोक :--

लतायाः भूषणं पुष्पम् निशायाः भूषणं विधुः ।
क्षमा वीरस्य भूषास्ति विद्या छात्रस्य भूषणम् ।

पंचदशः पाठः

11 नवम्बर, 1971

(श्लोकाः)

1 कामना के श्लोक ।

2 अध्यापिका द्वारा एक-एक पंक्ति का आदर्श पाठ ।

3 छात्रों द्वारा उस का अनुकरण ।

4 इसी प्रकार से प्रत्येक श्लोक का पहले टुकड़ों में पठन होगा ।

5 तत्पश्चात् संपूर्ण इकाई का पठन अध्यापिका द्वारा ।

6 अनुकरण पाठ छात्राओं द्वारा ।

7 अर्थ का स्पष्टीकरण ।

8 आवृत्ति ---प्रश्नों द्वारा यथा प्रथम श्लोक ---

1 शालायां किं करोषि ?

2 प्रातः काले

3 सायं काले

इसी प्रकार से प्रत्येक श्लोक को क्रम से पढ़ाया जायेगा ।

9 आज का श्लोक

पाठं पठामि शालायां तं स्मरामि गृहे पुनः ।
दुग्धं पिबामि प्रातश्च सायं खेलामि हर्षितः ।

षोडशः पाठः

18 नवम्बर, 1971

एतत् (यह) तथा किम् (क्या कौन) सर्वनाम

1 कामना के श्लोक ।

2 प्रस्तावना :—छात्रों को सर्वनाम किसे कहते हैं ? यह प्रश्नों की सहायता से समझाया जायेगा ,,जैसे उन से पूछे राम खाता है, वाक्य में राम के स्थान पर कौन सा दूसरा शब्द प्रयोग में लाया जा सकता है। जैसे वह ,यह, इत्यादि । तो इन्हीं शब्दों को सर्वनाम कहते हैं ।

3 अध्यापिका द्वारा आदर्श पाठ ।

4 छात्रों द्वारा अनुकरण पाठ ।

5 एतत् का प्रथमा तथा द्वितीया में—

1 पुंलिग

2 स्त्रीलिंग

3 नपुंसक लिंग रूप पाठ की सहायता से समझाये जायेंगे ।

6 इसी तरह किम् के रूप भी तीनों लिंगों में व दोनों विभक्तियों में साथ-साथ ही स्पष्ट किये जायेंगे ।

7 कुछ प्रश्नों के उत्तर पूछे जायेंगे, जिन से एतत् के प्रयोग का स्पष्टीकरण हो जायेगा ।

8 कुछ प्रश्न बनवाये जायेंगे, जिस से "किम्" का प्रयोग छात्रों को भली-भांति स्पष्ट हो जायेगा ।

9 आज का श्लोक :—

प्रातः स्मरामि रूपाणि, सायं पाठं लिखामि च ।।
दिने गच्छामि शालां वै तत्र विद्यां पठामि च ।।

सप्तदशः पाठः

25 नवम्बर, 1971

यत् (जो) तथा तत् (वह) सर्वनाम

1 कामना के श्लोक

2 प्रस्तावना—इस में अध्यापक छात्रों से इस प्रकार से वार्तालाप करेंगे

कि छात्र स्वयं ही यह तथा वह के प्रयोग को जानने के लिये उत्सुक हो जायें।

जैसे :– :1: जो काम करता है वह फल भी प्राप्त करता है।

:2 :जो भागता है वह अश्व है, इत्यादि।

अध्यापक को यह वाक्य छात्रों के मुख से ही कहलवाने की चेष्टा करनी चाहिये :

3 आदर्श पाठ, अध्यापक द्वारा :

4 अनुकरण पाठ छात्रों द्वारा।

5 पाठ की सहायता से यत् व तत् का प्रयोग प्रथमा तथा द्वितीया में तीनों लिगों अर्थात् पुलिंग, स्त्रीलिंग व नपुंसकलिग में छात्रों को समझाया जायेगा।

6 रिक्त स्थान पूर्ति करवा कर आवृत्ति करवाई जायेगी।

7 आज का श्लोक

पठन्ति समये ये च क्रीडन्ति च लिखन्ति च।
साफल्यं ते परीक्षायां प्राप्नुवन्ति न संशयः॥

अष्टादशः पाठः

2 दिसम्बर, 1971

युष्मत् (तू) और अस्मद् (मैं) सर्वनाम

1 कामना के श्लोक।

2 प्रस्तावना।

3 वार्तालाप विधि द्वारा पाठन।

4 त्रुटि सुधार।

5 जायेगा।
जायेंगे।

6 आवृत्ति।

7 आज का श्लोक

उत्तिष्ठामि सदा प्रातर् अहं ध्यायामि चश्वरम्।
अन्नं दीनाय यच्छामि, वाटिकायां भ्रमाम्यहम्॥

एकोनविंशः पाठः

9 दिसम्बर, 1971

विविधाः श्लोकाः

1 कामना के श्लोक ।

2 प्रथम श्लोक—इस की प्रथम पंक्ति का अध्यापिका द्वारा आदर्श पाठ ।

3 छात्रों द्वारा अनुकरण पाठ ।

4 द्वितीय पंक्ति का आदर्श पाठ ।

5 द्वितीय पंक्ति का अनुकरण पाठ ।

6 संपूर्ण इकाई का आदर्श पाठ ।

7 संपूर्ण इकाई का अनुकरण पाठ ।

8 इसी प्रकार से श्लोक को स्वर और लय से पाठ सिखाया जायेगा ।

9 अर्थ का स्पष्टीकरण ।

10 आवृत्ति ।

11 आज का श्लोक

क्रोधं त्यक्ष्यामि लोभं च भूतानां वै हिते रतः ।
सज्जनस्तु भविष्यामि असाधुर्न कदाचन ॥

विंशः पाठः

16 दिसम्बर, 1971

चतुरः काकः (भूत कालः)

1 कामना के श्लोक ।

2 प्रस्तावना—अध्यापिका छात्रों से प्यासे कौवे की कहानी पूछेगी ।

3 अध्यापिका द्वारा आदर्श पाठ ।

4 छात्रों द्वारा अनुकरण पाठ ।

5 लङ् लकार (भूत काल) का प्रयोग कथा की सहायता से स्पष्ट किया जायेगा ।

6 संस्कृत में छोटे-छोटे प्रश्नों के उत्तर पूछे जायेंगे ।

7 आज का श्लोक

प्राणान् त्यजति देशाय पीडितानां सहायकः ।
य आचरति कल्याणं लोके मानं स विंदति ।।

एकविंशः पाठः

6 जनवरी, 1972

आज्ञा (लोट्)

1 कामना के श्लोक ।

2 प्रस्तावना ।

3 आदर्श पाठ –अध्यापिका द्वारा ।

4 अनुकरण पाठ छात्रों द्वारा ।

5 छात्रों की सहायता से त्रुटि निवारण : सुधार ।

6 लोट्लकार किस स्थान पर प्रयोग में लाया जाता है । इस का स्पष्टीकरण पुस्तक की सहायता से । लोट् का तीनों पुरुषो व वचनों में प्रयोग ।

7 आवृत्ति, अनुवाद विधि द्वारा ।

8 आज का श्लोक

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।

द्वाविंशः पाठः

13 जनवरी, 1972

आश्रम :
(इकारान्त शब्द)

1 कामना के श्लोक ।

2 प्रस्तावना–छात्रों से आश्रम के बारे में कुछ पूछा जायेगा । अगर उत्तर न मिले तो अध्यापक स्वयं आश्रम के बारे में छात्रों को किंचित् ज्ञान करवायेगें ।

3 आदर्श पाठ, अध्यापक द्वारा ।

4 अनुकरण पाठ छात्रों के द्वारा ।

5 छात्रों की सहायता से त्रुटि सुधार ।

6 पाठ में आये इकारान्त शब्दों को प्रयोग में लाते हुये इकारान्त शब्दों के विभिन्न रूपों का प्रयोग समझाया जायेगा ।

7 कुछ छोटे-छोटे प्रश्न संस्कृत में पूछे जायेंगे ।

8 छात्रों से कुछ नये इकारान्त शब्द पूछे जायेंगे ।

9 आज का श्लोक

पुस्तकस्था तु या विद्या, परहस्तगतं धनम् ।
कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद् धनम् ।।

त्रयोविंशः पाठः

20 जनवरी, 1972

सुभाषित

1 कामना के श्लोक ।

2 प्रस्तावना ।

3 प्रथम श्लोक: अध्यापिका द्वारा प्रथम श्लोक की प्रथम पंक्ति का आदर्श पाठ ।

4 छात्रों द्वारा अनुकरण पाठ ।

5 त्रुटि-सुधार ।

6 द्वितीय पंक्ति का आदर्शपाठ ।

7 छात्रों द्वारा अनुकरण पाठ ।

8 त्रुटि सुधार ।

9 संपूर्ण इकाई का आदर्श पाठ ।

10 छात्रों द्वारा अनुकरण पाठ ।

11 छात्रों द्वारा पुनः पाठ ।

12 अर्थ व शिक्षा का स्पष्टीकरण ।

13 आवृत्ति ।

14 इसी प्रकार से प्रत्येक सुभाषित को क्रम में लिया जाएगा ।

15 इन सुभाषित को स्मरण करने के लिये छात्रों को कहा जाएगा ।

भवन्ति कानने वृक्षा फलैः पुष्पैः सुभूषिताः ।
आम्र वृक्षं विना चित्तं कोकिलस्य न तुष्यति ।।

चतुर्विंशः पाठः

3 फरवरी, 1972

संख्या

1 कामना के श्लोक ।

2 प्रस्तावना, छात्रों से ही प्रश्न पूछे जायेंगे, जैसे:—उन के कितने हाथ हैं, कितने कान हैं : कितनी आखें हैं, इत्यादि । अब इन्हें संस्कृत में कैसे कहेंगे,—पाठ को पढ़ाते हुये यह सुविधा से समझाया जा सकता है ।

3 अध्यापिका पंक्तियों का पाठ करेंगी ।

4 छात्रों द्वारा पाठ ।

5 पंक्ति में आई संख्या विशेष पर ध्यान आकर्षित किया जायेगा ।

6 इसी प्रकार पुस्तक के वाक्यों को पढ़ाते हुये 20 तक संख्यायें छात्रों को सिखा दी जायेंगी ।

7 आवृत्ति, अनुवाद द्वारा जिस में विभिन्न संख्याओं का प्रयोग छात्रों द्वारा करवाया जायेगा ।

8 आज का श्लोक :—

प्रदोषे दीपकश्चन्द्रः प्रभाते दीपकः रविः ।
त्रिलोके दीपकः धर्मः सुपुत्रः कुलदीपकः ।।

पंचविंशः पाठः

10 फरवरी, 1972

विधु : (उकारान्त पुंलिंग शब्द)

1 कामना के श्लोक ।

2 प्रस्तावना, चन्द्रमा के विषय में बताते हुये पाठ पढ़ाना आरंभ किया जायगा ।

3 अध्यापिका द्वारा आदर्श पाठ ।

4 छात्रों द्वारा अनुकरण पाठ ।

5 उच्चारण की त्रुटियों का सुधार ।

6 अर्थ पक्ष का प्रश्न उत्तर विधि से स्पष्टीकरण ।

7 उकारान्त शब्दों के विभिन्न रूपों के प्रयोग को समझाया जायेगा ।

8 आवृत्ति :—कुछ उकारान्त शब्दों का प्रयोग करवाया जायेगा ।

9 आज का श्लोक :–

वृथा वृष्टिः समुद्रेषु, वृथा तृप्तस्य भोजनम् ।
वृथा दानं समर्थस्य, वृथा दीपो दिने तथा ॥

षड्विंशः पाठः

17 फरवरी, 1972

श्री राम :

1 कामना के श्लोक ।

2 प्रस्तावना, राम के विषय में थोड़ा ज्ञान करवाया जायेगा ।

3 अध्यापिका द्वारा आदर्श पाठ ।

4 छात्रों द्वारा अनुकरण पाठ ।

5 उच्चारण की त्रुटियों में सुधार ।

6 अर्थ का स्पष्टीकरण ।

7 कुछ विशेष शब्दों का विवेचन :—

अभवत्, भार्या, छलेन, विभीषणाय ।
रामराज्यम् इत्यादि ।

8 आवृत्ति ।

9 आज का श्लोक :–

सर्पः क्रूर खलः क्रूरः, सर्पात्क्रूरतरः खलः ।
सर्पः शाम्यति मंत्रेण, दुर्जनः नैव शाम्यति ॥

सप्तविंशः पाठः

24 फरवरी, 1972

प्रकीर्णाः श्लोकाः

1 कामना के श्लोक ।

2 प्रथम श्लोक अध्यापिका द्वारा प्रथम पंक्ति का आदर्श पाठ ।

3 छात्रों द्वारा अनुकरण पाठ ।

4 द्वितीय पंक्ति का आदर्श पाठ ।

5 अनुकरण पाठ ।

6 संपूर्ण इकाई का आदर्श पाठ ।

7 अनुकरण पाठ ।

8 उच्चारण की त्रुटियों में सुधार ।

9 अर्थ का स्पष्टीकरण ।

10 आवृत्ति ।

11 प्रत्येक श्लोक को इसी विधि से पढ़ाया जायेगा ।
आज का श्लोक :–

यः गुरून् पाठशालायां नित्यं नमति श्रद्धया ।
शीघ्रं भवति स प्राज्ञः लोके मानं च विंदति ।।

अष्टाविंशः पाठः

2 मार्च, 1972

पत्रम्

1 कामना के श्लोक ।

2 प्रस्तावना, जैसे हिन्दी में पत्र लिखते हो, क्या संस्कृत में लिखना चाहोगे ।

3 अध्यापक द्वारा पत्र लिखने की विधि समझाई जायेगी ।

4 पत्र को पढ़ कर सुनाया जायेगा ।

5 छात्रों म से कुछ से पत्र के पाठन का अनुकरण ।

6 पत्र के भाव का स्पष्टीकरण ।

7 आवृत्ति ।

8 आज का श्लोक :–

विद्यालयस्य यः छात्रः सदा पालयति प्रथाम् ।
भवति स्नेहपात्रं स गुरुणां नात्र संशयः ।।

एकोनत्रिंशः पाठः

9 मार्च, 1972

कक्षायाम्

1 कामना के श्लोक ।

2 प्रस्तावना ।

3 पाठ का नाटकीय ढंग से पठन छात्रों द्वारा अध्यापिका की सहायता से।
4 उच्चारण की त्रुटियों में सुधार।
5 अर्थ पक्ष का स्पष्टीकरण (प्रश्न उत्तर विधि से)
6 गांधी, सरदार पटेल व नेहरू के जीवन के बारे में छात्रों को सुगम ढंग से पाठ को पढ़ाते हुये ही ज्ञान करवाया जायेगा।
7 कुछ विशिष्ट शब्दों का विवेचन।
8 आवृत्ति।
9 आज का श्लोक :–

अमृतं शिशिरे वन्हिः अमृतं क्षीर भोजनम्।
अमृतं लोकसम्मानम् अमृतं प्रियदर्शनम्।

त्रिशः पाठः

16 मार्च, 1972

भारतीय परिवार :

1 कामना के श्लोक।
2 प्रस्तावना।
3 अध्यापिका द्वारा आदर्श पाठ।
4 छात्रों द्वारा अनुकरण पाठ।
5 त्रुटिसुधार।
6 पाठ में आये घर के सदस्यों को संस्कृत में क्या क्या कहते हैं, छात्रों को समझाया जायेगां। जैसे :––दादा माता पिता, बहन तथा भाई, चाचा, इत्यादि।

पाठ का विशिष्ट उद्देश्य इन्हीं शब्दों का बोध करवाना है। :
7 प्रश्न उत्तर विधि अथवा रिक्त स्थान पूर्ति अथवा अनुवाद विधि द्वारा आवृत्ति।

आज का श्लोक :–

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्॥

छठी कक्षा के लिये

विषय-संस्कृत

वर्षा शरत् सत्र

बृहस्पतिवार

समय-प्रात: दस बज कर दस मिनट से 10 बजकर 30 मिनट तक ।

सायं-पांच बज कर 20 मिनट से 5 बजकर 40 मिनट तक ।

मीटर प्रात : 294.1 और 41.15

सायं 370.4 और 41.15

दिनांक	कार्यक्रम
22-7-71	संस्कृत पाठ 1
29-7-71	संस्कृत पाठ 2
5-8-71	संस्कृत पाठ 3
12-8-71	संस्कृत पाठ 4
19-8-71	संस्कृत पाठ 5 प्रथम पुरुष
26-8-71	संस्कृत पाठ 6 मध्यम पुरुष
2-9-71	संस्कृत पाठ 7 उत्तम पुरुष
9-9-71	संस्कृत पाठ 8 अकारान्त पुंल्लिग शब्द, कर्ता कारक और कर्म कारक
16-9-71	संस्कृत पाठ 9 करण और सम्प्रदान कारक
23-9-71	परीक्षा के कारण कार्यक्रम नहीं ।
30-9-71	शरतकालीन अवकाश के कारण कार्यक्रम नहीं ।

शीतकालीन सत्र अक्टूबर से मार्च तक

ृहस्पतिवार

समय-प्रात : 10-30 से 10-50 सायं 5-20 से 5-40

7-10-71	संस्कृत पाठ 10 अपादान कारक और संबन्ध
14-10-71	संस्कृत पाठ 11 अधिकरण कारक और संबोधन ।
21-10-71	संस्कृत पाठ 12 अकारान्त नपुंसक लिंग शब्द ।
28-10-71	संस्कृत पाठ 13 सायंकाल: और लृट लकार के प्रयोग
4-11-71	संस्कृत पाठ 14 चतुरा बाला (आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द)
11-11-71	संस्कृत पाठ 15 श्लोका:
18-11-71	संस्कृत पाठ 16 सर्वनाम , तत्, एतत् और किम
25-11-71	संस्कृत पाठ 17 यत्, (सर्वनाम)
2-12-71	संस्कृत पाठ 18 युष्मत् और अस्मत् शब्दों का प्रयोग ।
9-12-71	संस्कृत पाठ 19 विविधा: श्लोका:
16-12-71	संस्कृत पाठ 20 चतुर: काक: और भूतकाल ।
23-12-71	परीक्षा के कारण कार्यक्रम नहीं ।
30-12-71	शीतकालीन अवकाश के कारण कार्यक्रम नहीं ।
6-1-72	संस्कृत पाठ 21 लोट् लकार
13-1-72	संस्कृत पाठ 22 आश्रम: (इकारान्त पुंलिग शब्द)
20-1-72	संस्कृत पाठ 23 सुभाषितानि

27-1-72	ईदुज्जहा के अवकाश के कारण कार्यक्रम नहीं ।
3-2-72	संस्कृत पाठ 24 संख्यावाचक शब्द
10-2-72	संस्कृत पाठ 25 विधुः उकारान्त पुंल्लिग शब्द ।
17-2-72	संस्कृत पाठ 26 श्री रामः
24-2-72	संस्कृत पाठ 27 प्रकीर्णाः संस्कृत श्लोकाः
2-3-72	संस्कृत पाठ 27 पत्रम्
9-3-72	संस्कृत पाठ 29 कक्षायाम्
16-3-72	संस्कृत पाठ 30 भारतीयः परिवारः

आकाशवाणी, दिल्ली

छात्रीय कार्यक्रम मूल्यांकनप्रपत्र का नमूना

कृपया अपने उत्तर पर सही–चिन्ह लगा दें ।

कक्षा 6 विषय संस्कृत प्रसार-तिथि प्रातः सायं

1 प्रसार से पूर्व और बाद की चर्चा में कितना समय दिया गया 5/10/15 मिनट

2 प्रसारित सामग्री उपयुक्त थी ☐ अधिक थी ☐ कम थी ☐

3 ठीक ढंग से प्रस्तुत किया गया ☐ बहुत तेजी से ☐ बहुत धीरे ☐

4 छात्रों को पाठ समझ में आ गया ☐ नहीं आया ☐

5 छात्रों ने पाठ में पूरी रुचि ली ☐ उपेक्षा से सुना ☐

6 पाठ उपयोगी था ☐ उपयोगी नहीं था ☐

7 कार्यक्रम पुस्तिकाएं उपयोगी हैं ☐ नहीं हैं ☐

8 कार्यक्रम के बारे में आपके सुझाव

प्रधानाचार्य

कक्षाध्यापक

नोट––

ये मूल्यांकन पत्र, आकाशवाणी दिल्ली से मंगवा लिए जाएं ।

मैं अपने इनविचारों के लिये विद्वानों से क्षमा चाहता हूं कि भारतीय विश्व-विद्यालयों में बड़े-बड़े विद्वान् प्रादैशिक भाषाओं में लिखते हुए बच्चों की सी भूलें करते हैं, जिसका कारण संस्कृत-ज्ञान का अभाव होता है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर शान्ति निकेतन में प्रादैशिक भाषाओं के विज्ञ अध्यापक की नियुक्ति के समय संस्कृत ज्ञान की अनिवार्यता को महत्व देते थे।

——आचार्य विधुशेखर भट्टाचार्य

भारत के द्वितीय प्रधान-मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के सातवें दीक्षांत समारोह में भाषण देते हुए कहा——

'संस्कृत देश की बहुमूल्य धरोहर है। यह समस्त भारतीय संस्कृति का मूल स्रोत है। यह विश्वबन्धुत्व, उदारता, देशप्रेम जैसे महान् गुणों की प्रेरक है। इस का साहित्य भारत की बौद्धिक प्रगति का इतिहास है। 'मातृदेवो भव' में राष्ट्र-माता की सेवा के अमर स्वर छिपे हैं।'

आकाशवाणी, दिल्ली

छात्रीय कार्यक्रम

[illegible]ार, कक्षा विषय	समय	सत्र
सोमवार आठवीं कक्षा के लिए	प्रातः 10.10 से 10.30 और सायं 5.20 से 5.40	जुलाई से सितम्बर तक
सामान्यज्ञान	प्रातः 10.30 से 10.50 और सायं 5.20 से 5.40	अक्तूबर से फरवरी तक
मंगलवार छठी कक्षा के लिए	प्रातः 10.10 से 10.30 और सायं 5.20 से 5.40	जुलाई से सितम्बर तक
अंग्रेजी	प्रातः 10.30 से 10.50 और सायं 5.20 से 5.40	अक्तू[illegible] [illegible] मार्च तक
बृहस्पतिवार छठी कक्षा के लिए	प्रातः 10.10 से 10.30 और सायं 5.20 से 5.40	जुलाई से सितम्बर तक
संस्कृत	प्रातः 10.30 [illegible] 10.50 औ[illegible] सायं 5.20 [illegible] [illegible]40	अक्तूबर से मार्च तक
शनिवा[illegible] [illegible]	प्रात[illegible] [illegible] [illegible]30 [illegible] [illegible] 5 [illegible]	ज[illegible] [illegible]
हिन्दी	[illegible] [illegible]और सायं 5.20 से 5.40	[illegible]

[illegible]—प्रातः—294.1 और 41.15 सायं —[illegible]

भारत सरकार मुद्रणालय फरीदाबाद द्वारा मुद्रित